वर्ष 2005 से 2007 तक की अव्यक्त वाणीओ में से बापदादाने समय की समीपता के जो गंभीर महावाक्य उच्चारण किये है उनको अलग कर ये संग्रह बनाया गया है। साथ साथ हमारी सबकी प्यारी, बापदादा समान, फरिस्ता स्वरुप आदरणीय दादीजीने आज से 7 वर्ष पहेले जो समय की समीपता के स्पष्ट महावाक्य उच्चारे थे ये भी इसमें सामिल है। ये महावाक्य बार-बार पढने से आत्मा के अंदर से जो आलस्य-अलबेलेपन की माया है वह दूर हो जाती है और आत्मा संपन्न स्थिति प्राप्त करने की तैयारी में लग जाती है।

# बापदादा के गंभीर ईशारे
# (समय की समीपता)

## 4-9-05 से 15-12-07

- बाप अभी बच्चों के दु:ख की पुकार सुनते हुए परिवर्तन चाहते है...
- मुक्तिधाम में जाना है, अनेक दु:खी, अशांत आत्माओं को मुक्तिदाता बाप के साथी बन मुक्ति दिलाना है...
- विनाशकारी तो तडप रहे है कि विनाश करे...? विनाश करे...?
- बाप से प्रकृति भी पूंछती है कि कब तक विनाश करें ?
- माया भी अभी थक गई है, वह भी चाहती है कि अब हमें भी मुक्ति दे दो...
- भक्त भी भक्ति कर करके थक गये है -उन्हें भी मुक्ति का वर्सा दिलाओं...
- अेडवान्स पार्टी भी कह रही हैं -कब बाप के साथ मुक्तिधाम का दरवाजा खोलेंगे...

है लेकिन परिवर्तन नहीं कर सकते है। तो यह जो वायुमण्डल है कि और कुछ चाहिए, और कुछ चाहिए, यह जो भावनायें है वह टोटल सारे विश्व में बढती जा रही है। तो **दादी ईस सुक्ष्म सेवा से समय को जैसे समीप ला रही है।**

रुप में, वरदाता के रुप में सकाश दे रहे थे। अैसे ही बाबा को देखते हुए हमें भी अपना वैसा ही रुप अनुभव होने लगा।

➪ फिर बाबानें कहां बच्ची देखा बाबा और आप सब मेरे जो मुरब्बी बच्चे, बाप समान बनने के उमंग-उत्साह में रहने वाले बच्चे है, उन्हों का वर्तमान समय काम क्या है? वह बाबा आपको दिखा रहे है कि आज मनुष्य आत्माओं को चाहिए क्या? **वर्तमान समय साधन तो बहुत है लेकिन उन साधनों से जो सुख, शांति की प्राप्ति होनी चाहिए, उसके बजाये अभी सब फिल कर रहे है कि ईन साधनो से सुख और दुःख दोनो की प्राप्ति होती है। तो अभी सब महेसुस कर रहे है कि हमारे दिल की जो चाहना है वह ईन साधनों से पुरी नहीं हो रही है। तो जैसे कोई की भूख बढती जाती है, अैसे आत्माओं की मैजोरिटी आशायें बढती जा रही है कि कोई सुख चेन की अनुभूति कराने वाला मिले। चाहिए, चाहिए का आवाज जैसे हर एक के दिल से निकल रहा है।**

➪ दादी का अमृतवेले का ही टाईम फिक्स है। अमृतवेले बाबा अपने साथ मुजे ईमर्ज करता है। और में आत्माओं को सकाश देती हुं।

➪ बाबाने कहां अभी से दादी की सेवा शुरु है। मैने कहां कैसे शुरु है? बाबाने कहां अभी आप सारे विश्व के अंदर रिझल्ट में यह तो देख रही हो, सभी समझते हैं, **सायन्स दान भी दिलशिकस्त हो गये है कि हम कुछ नहीं कर सकते है। महात्मायें अंदर से समजते है हमने ईतना सब किया है, लेकिन जो चाहते है वह नहीं हो रहा है। सर्व मनुष्य आत्मायें समझती है -शांति हो शांति हो लेकिन प्रेक्टिकल में तो अशांति ही बढ रही है।** तो अभी से दादी की सेवा से यह परिवर्तन का प्रभाव पड रहा है, सभी महसूस करते है कि कोई और शक्ति चाहिए और दिनप्रति दिन तीन सत्ताओ के अलावा कोई और सत्ता चाहिए, उस पर सबका ध्यान जा रहा है। वह भी समझते है कोई पावर हमारे पास आवे तो हम प्रकृति को परिवर्तन करे। **अभी प्रकृति अति में जा रही**



प्यारे ब्रह्माबाबा को शिव परमात्माने १९३७ में पुरानी दुनियाके महाविनाश का साक्षात्कार कराया था .... जो अभी साक्षात होंगा।

## बेहद के वैरागी बनो, अब वापिस घर जाना है..

अभी थोडे समय के बाद ही सारी पुरानी, पतित, भ्रष्टाचारी दुनिया का महाविनाश शुरु हो जायेंगा, पुरानी पतित सृष्टि की समाप्ति का नगाडा बजेगा, विनाशलीला का तांडव नृत्य चारों तरफ से चलेगा। मुक्तिधाम का गेट खुलेगा। प्रकृति के पांचो तत्वोंका भारी प्रकोप होगा। नेचरल केलेमिटीझ आयेगी। जबरदस्त भूकंप होगा, वायु के भी प्रकोप होंगे, ग्लोबल वोर्मिंग के कारण आकाश से अग्निवर्षा होगी, आग लगेंगी, समुद्र उछलेगा, मुसलधार बारीश होंगी, एक हिस्सा धरनी बाकी सब जलमय होगा, सारी खेती पानी में डुब जायेगी। दूसरी और भारत में जबरदस्त गृहयुध्ध होगा, खुनी नाहक खेल होगा। तिसरी और अंतिम तिसरा विश्व युद्ध होगा, अणु-परमाणुं बोम्ब्स गीरेंगे, करोडों की संख्या में आत्मायें शरीर छोडेंगी। पानी की एक बुंद भी पीने को नहीं रहेंगी। अनाज भी खाने लायक नहीं रहेंगा, पेट पीठ से लग जायेगा, धन होते हुए भी धन काम में नहीं आयेगा। साधन होते भी साधनों द्वारा प्राप्ति नहीं होगी। विकारों का, पुराने विकारी संस्कारो का, तमोगुणी आत्माओं का वार होगा। सारी

दुनिया में त्राही त्राही होगी, रोनेवाला कोई भी नहीं रहेगा। जिन्हें तुम अपना समजते हो, जो तुम ईन आंखो से देखते हो, वह सबकुछ समाप्त हो जायेगा। चारों तरफ दुःखो का हाहाकार बढेगा। सुख की एक झलक भी दिखाई नहीं देगी। ये चमकीली रावण की सोने की लंका भष्म हो जायेंगी। और ये समय अचानक ही आयेगा।

इसलिए हे मीठे बच्चे, मीठी आत्मायें - अब तो ऐसी मिटनेवाली दुनिया से बेहद के वैरागी बनो, नष्टोमोहा बनो। अब वापिस अपने घर परमधाम चलना हैं तो गहन तपस्या में लग जाओ। यही तपस्या वा साधना ही ऐसे विकराल तांडव में आपके काम आयेगी, विनाश के समय सेफ्टि का साधन बनेंगी। इसलिये संसार की जुठी बातों में अपना समय बरबाद नहीं करो और अपना श्रेष्ठ पार्ट बजाते भी श्वासों श्वास परमात्मा पिता शिवबाबा की याद में मस्त रहो। भगवान आपके साथ ही साथ हैं, मददगार हैं... सिर्फ बाबा की याद ही आपको इस विनाश ज्वाला से न्यारा और प्यारा बनायेगीं, हाहाकार के बीच भी आप प्रभु मिलन के सुख का अनुभव कर सकेंगे। इसलिए अभी से निरंतर बाबा की याद का अभ्यास करते रहो।

- ब्रह्माकुमारीझ

शीघ्र खत्म करके और नया सबकुछ शुरु करो। फिर बाबाने दादी की तरफ देखा तो **दादी ने सबके प्रति कहा कि अभी ये थोडा समय महेनत का हैं, अभी थोडा अटेन्शन देकर अपने स्वयं के संस्कारो के उपर ध्यान रखे कि मुझे पुराना खतम करना हैं, नया धारण करना हैं।**

⇨ मैंने कहा बाबा जब दादी कर्मेन्द्रियजीत प्रकृतिजीत, मायाजीत बन गई फिर दादी जन्म क्यों ले रही हैं? तो बाबा मुस्करायें और कहा बच्चें आपकी बुद्धिमें बार बार यह बात आती हैं। **यह कोई साधारण बच्चा नहीं हैं, यह चमत्कारिक बच्चा हैं और इसका जो शरीर बन रहा हैं, पांच तत्व ही इसके शरीर को सुंदर बना रहे हैं। अब जैसे जैसे ड्रामा का पर्दा खुलता जायेंगा, आपको पता चलता जायेंगा कि इसमें क्या राज हैं।**

**9-11-07** (दिवाली निमित्त- गुल्जार दादी द्वारा)

⇨ दादीने कहा कि बाबा की जो हर बच्चें में शुभ भावना हैं और बाबा समझते हैं कि ये जो मेरे सरेन्डर बच्चें हैं। सरेन्डर का अर्थ ही हैं सब स्वाहा कर देना। आप सबके पास और हैं ही क्या जो बाबा को देंगे। **इसलिए जो पुरानी चीजे हैं, संस्कार स्वभाव आदि जो भी हैं वह सबकुछ समर्पण कर दो।**

⇨ **आज के दिन दादी और बाबा, एडवान्स पार्टी के महारथी बच्चें जो गये हैं वो मिलकर के यही संदेश दे रहे हैं कि वह डेट मेरी कौन सी होंगी जिसमें हम अपने पुरुषार्थ के अनुसार, पुरुषार्थ में संपन्न होंगे। तो हरेक अपने अंदर में सोचे कि इतने समय में तो हम जरुर संपन्न बनके बाबाके आगे आयेंगे। संपन्न बनने की डेट फिक्स करो और उसी अनुसार अपने पुरुषार्थ को बढाते रहो।**

**29-11-07** (दादीजी के तीसरा मास निमित्त)

⇨ बाबा के नयनो में आज विशेष जैसे सारे वर्ल्ड की आत्माओं का गोला नजर आ रहा था और बाबा सर्व आत्माओं को एकदम रहमदिल के

बापदादा देख देख खुश हो बच्चों के गीत गाते वाह ! मेरे निमित्त सर्विसएबल बच्चें वाह ! बापदादा तो निमित्त बने हुऐ बच्चों को विशेष शक्तियों का वायब्रेशन देते हैं क्योंकि बच्चों की शक्तिशाली मर्सीफुल वृत्ति से ही तो विश्वमें श्रेष्ठ वायब्रेशन पहुंचता हैं।

⇨ एक बाप की आशा पूर्ण करो- जो **आपस में मिलकर संस्कार मिलन की रास बाप को दिखाओ क्योंकि यह संस्कार परिवर्तन ही सर्व विघ्नों को समाप्त करने का सहज साधन हैं।**

**25-10-07** (दादीजी की दूसरे मास की तिथि)

⇨ बाबा ने कहा बैलेन्स की अभी भी आवश्यकता हैं। सेवा के समय सेवा करते हैं, योग के समय यथाशक्ति सभी योग भी करते हैं **लेकिन बाबा चाहता हैं कि योगी जीवन हो।** जीवन हर श्वांस में होती हैं। जीवन **6 - 7** घंटे, **2** घंटे की नहीं होती। तो बाबा इसलिये मुस्करा रहा हैं कि वह दिन कौन सा आयेगा जिसमें बाबा के पास टी.वी.में यह आयेगा कि मैंजोरिटी बच्चें इस बैलेन्स में नंबर वन हो गये। **बाबा यही सेरीमनी देखना चाहते हैं।**

⇨ दादीने कहां मैंने क्या किया ? **मैंने अपनी योगी जीवन बनाई, सिर्फ योग लगाने वाली नहीं रही, योगी जीवन में रही। तो जो भी मुझे याद करते हैं, वह मेरे समान योगी जीवन तो बनायें ना।** फिर मैंने कहा दादी यज्ञ के प्रति आपको क्या संकल्प आता हैं ? तो कहा मैं समझती हूं जैसे मैं निर्मोही, निर्विकल्प रही **ऐसे एक एक सब अभी जल्दी जल्दी अपनी कमजोरी बाबा को दे देवें ना। यह बोझ बाबा को दे दो ना अपने पास क्यों रखा हैं ? मैंने तो जन्म से ही बाबा को बोझ दे दिया था। यह फिर अपने पास क्यों रखकर बैठे हैं ?**

**9-11-07** (दिवाली निमित्त - मोहीनीबहेन द्वारा)

⇨ बच्चों को कहना कि अच्छी तरह से चेक करें कि आज के दिन मेरा पुराना खाता खत्म हुआ या थोडा बहुत हैं ? जो हो उसको भी अति

**- 23-2-97**

ऐसे नहीं सोचना कि अभी कुछ समय तो पडा है, ईतने में विनाश तो होना नहीं हैं, यह नहीं सोचना। विनाश होना है अचानक। पूछकर नहीं आयेगा कि हां तैयार हो! सब अचानक होना है। आप लोग भी ब्राह्मण कैसे बनें? अचानक ही संदेश मिला, प्रदर्शनी देखी, संपर्क-संबंध हुआ बदल गये। क्या सोचा था कि ईस तारीख को ब्राह्मण बनेंगे? अचानक हो गया ना! तो परिवर्तन भी अचानक होना है। आपको पहले माया और ही अलबेला बनायेंगी, सोचेंगे हमनें तो **2000** सोचा था -वह भी पूरा हो गया, अभी तो थोडा रेस्ट कर लो। पहले माया अपना जादू फैलायेगी, अलबेला बनायेंगी। किसी भी बात में, चाहे सेवा में, चाहे योग में, चाहे धारणा में, चाहे संबंध-सम्पर्क में, यह तो चलता ही है, यह तो होता ही है... ऐसे पहले माया अलबेला बनाने की कोशिश करेगी। फिर अचानक विनाश होगा, फिर नहीं कहना कि बापदादा ने सुनाया ही नहीं, ऐसा भी होना है क्या! ईसलिए पहले ही सुना देते है -अलबेले कभी भी किसी भी बातमें नहीं बनना। चारों ही सब्जेकट में अलर्ट, अभी भी कुछ हो जाए तो अलर्ट। उस समय नहीं कहना बापदादा अभी आओ, अभी साथ निभाओ, अभी थोडी शक्ति दे दो, उस समय नहीं देंगे। अभी जितनी शक्ति चाहिए, जैसी चाहिए उतनी जमा कर लो। सबको खुली छुट्टी है, खुले भंडार है, जितनी शक्ति चाहिए, जो शक्ति चाहिए ले लो। पेपर के समय टीचर वा प्रिन्सीपाल मदद नहीं करता।

अव्यक्त बापदादा 18-1-98

## लगाव मुक्त बन बेहद के वैरागी बनो

अभी समय प्रमाण सबको बेहद के वैराग्य वृत्ति में जाना ही होगा। लेकिन बापदादा समझते हैं कि बच्चों का समय शिक्षक नहीं बनें, जब बाप शिक्षक है तो समय पर बनना - यह समय को शिक्षक बनाना है। उसमें मार्क्स कम हो जाती हैं। अभी कई बच्चे कहते हैं - समय सिखा देगा, समय बदला देगा। समय के अनुसार तो सारे विश्व की आत्मायें बदलेंगी लेकिन आप बच्चे समय का ईन्तजार नहीं करो। समय को शिक्षक नहीं बनाओ। आप विश्व के शिक्षक के मास्टर विश्व शिक्षक हो, रचता हो, समय रचना है तो हे रचता आत्मायें रचना को शिक्षक नहीं बनाओ। ब्रह्मा बाप ने समय को शिक्षक नहीं बनाया, बेदह का वैराग्य आदि से अन्त तक रहा। आदि में देखा इतना तन लगाया, मन लगाया, धन लगाया, लेकिन जरा भी लगाव नहीं रहा। तन के लिए सदा नेचरल बोल यही रहा - बाबा का रथ है। मेरा शरीर है, नहीं। बाबा का रथ हैं। बाबा के रथ को खिलाता हूं, मैं खाता हूं, नहीं। तन से भी बेहद का वैराग्य। मन तो मनमनाभव था ही। धन भी लगाया, लेकिन कभी यह संकल्प भी नहीं आया कि मेरा धन लग रहा है। कभी वर्णन नही किया कि मेरा धन लग रहा है या मैंने धन लगाया है। बाबा का भण्डारा है, भोलेनाथ का भण्डारा है। धन को मेरा समझकर पर्सनल अपने प्रति एक रुपये की चीज भी यूज नहीं की। कन्याओं, माताओं की साधारण जन्म होते हैं, उसमें अंतर क्या हैं, वह राज फिर सुनाउंगा। मैंने कहा बाबा थोडा इशारा तो दे दो। तो दादीने कहा बाबा सुना दो ना। **तो बाबा ने कहा यह बहुत राज हैं, मैं समय प्रति समय सुनाता रहूंगा।**

⇨ लेकिन मेरा जो संकल्प हैं ना वह अभी इन्हों को पूरा करना हैं। तो बाबा ने कहा तुम क्या चाहती हो ? तो दादीने कहा जैसे बाबा आप मुझे सर्टीफिकेट देते हो, कि मैंने शुरु से लेकर सबको सम्मान दिया और उसके रिटर्नमें सबकी दुआयें ली, शुरु से मैंने प्रेक्टिकलमें यह पाठ पक्का किया, **तो मैं यही चाहती हूं कि हर एक छोटे बडे को सम्मान देते उन्हों से दुआयें लेवे। बस सबको सन्मान देना हैं, दुआ लेनी हैं, यही मेरा लक्ष्य रहा हैं।**

⇨ मुझे बहुत अच्छा अनुभव हो रहा था- एक तो नष्टोमोहा स्थिति क्या होती हैं, कोई भी चीज, कोई भी बात मुझे याद नहीं थी। **तो दादीने कहा मैं यह अनुभव इसलिये सुना रही हूं कि आप सभी भी ऐसा ही पुरुषार्थ करो जो ऐसे कर्मातीत स्थिति के अनुभव में ही शरीर छूटे।**

⇨ अभी बाबा ने मुझे शरीर में भेजा हैं, लेकिन में उस भान से न्यारी हूं। **बाबा इसका राज आपको बाद में सुनायेंगा लेकिन मेरा जन्म न्यारा हैं।**

⇨ डीपार्टमेन्ट के हेडस सभी को दादी ने याद किया। दादी ने कहा मैं सिर्फ दो शब्द आपको कहती हूं, ये हमारे दो शब्द कोई भी सेवा शुरु करते याद करना, फिर काम शुरु करना। तो सभी कहने लगे दादी जो आप कहेंगी, हम जरुर करेंगे, सभी बहुत उल्हास में थे। **तो दादीने दो शब्द सुनाये - एकनामी और इकोनोमी।**

**20-10-07** (देश विदेश के मुख्य भाई-बहेनोकी मीटिंगमें)

⇨ बापदादा इस संगठन को देख बहुत खुश हैं कि देश-विदेश के बच्चें मिलकर बहुत प्यार से सेवा को निर्विघ्न बनाऐं आगे बढाने के प्लैन बना रहे हैं। बच्चों का यह स्नेह भरा मिलनका लेने देन करने का द्रश्य

उन्होंको स्वप्नमें भी नहीं हैं कि हमारे को कुछ हो सकता हैं लेकिन प्रवेशता की हलचल होती हैं ना, जब हलचल होंगी तब उन्हों को आयेगा कि यह क्या हो रहा हैं। अभी तो दादी वतन में थी, जब हलचल होंगी तब सोचेंगे की यह क्या हैं ! बाबा ने दिखाया कि वह माता और भाई बहुत भक्त हैं। पानी भी पीते हैं तो भगवान को पहले अर्पण करके पीते हैं, ऐसी उनकी नौंधा भक्ति हैं। दादी जब पैदा होंगी तो ऐसे समझेंगे कि भगवानने कोई अवतार भेजा हैं, बच्चा नहीं अवतार भेजा हैं, कुछ होने वाला हैं तो इस रुपमें दादी जायेंगी।

⇨ **एडवान्स पार्टी को, साईन्स वालो को और आप ब्राह्मण आत्माओं को तीव्र पुरुषार्थ करने की सदा प्रेरणा देती रहेंगी।** जहां भी साईन्स वाले मूंझते हैं- क्या होंगा, कैसे होंगा, होंगा या नहीं होंगा उन्हों को ऐसा स्पष्ट कर देंगी जो वो तीव्र तैयारी करें, ब्राह्मण भी क्यों क्या नहीं करेंगे, बस करना ही हैं और एडवान्स पार्टी तो नाच रही थी, मम्मा और दीदी दोंनो तरफ से दादी की बांह पकडे कह रही थी - दादी अभी तो हम कमाल करके दिखायेंगी।

⇨ बस दादी को सम्मान और स्वमान यह दो शब्द बहुत याद हैं। बार बार यही शब्द रिपीट कर रही थी।

⇨ **तो बाबा गले लगे, दृष्टि दी और दादी हम सबके बीच से वतन से चली गई।**

**27-09-07** (दादीजी के प्रथम मास निमित्त)

⇨ लेकिन मैं तो आपे ही आ जाती हुं, मेरा तो घर हैं। फिर बाबा ने कहां बच्ची अभी पार्ट बजाने के लिए गई हैं। **कर्मो के हिसाब से, कर्म संबंध के हिसाब से नही गई हैं लेकिन सेवा के संबंध से गई हैं। तो यह सेवा के संबंध का जन्म बहुत न्यारा होता हैं।** मैने कहा बाबा वो न्यारापन क्या क्या होता हैं, कुछ सुनाओ ना ! तो बाबाने कहा अभी नहीं सुनाउंगा **जब जन्म ले लेगी फिर सुनाउंगा। इस जन्ममें और जो**



जिम्मेवारी है, कन्याओं-माताओं को विल किया, मेरापन नहीं। समय, श्वांस अपने प्रति नहीं, उससे भी बेहद के वैरागी रहे। इतना सब कुछ प्रकृति दासी होते हुए भी कोई एकस्ट्रा साधन यूज नहीं किया। सदा साधारण लाइफ में रहे। कोई स्पेशल चीज अपने कार्य में नहीं लगाई। वस्त्र तक, एक ही प्रकार के वस्त्र अन्त तक रहे। चेंज नहीं किया। बच्चों के लिए मकान बनाये लेकिन स्वयं यूज नहीं किया, बच्चों के कहने पर भी सुनते हुए उपराम रहे। सदा बच्चों का स्नेह देखते हुए भी यही शब्द रहे - सब बच्चों के लिए है। तो इसको कहा जाता है बेहद की वैराग्य वृत्ति प्रत्यक्ष जीवन में रही। अन्त में देखो बच्चे सामने हैं, हाथ पकडा हुआ है लेकिन लगाव रहा? बेहद की वैराग्य वृत्ति। स्नेही बच्चे, अनन्य बच्चे सामने होते हुए फिर भी बेहद का वैराग्य रहा। सेकण्ड में उपराम वृत्ति का, बेहद के वैराग्य का सबूत देखा। एक ही लगन सेवा, सेवा और सेवा... और सभी बातों से उपराम। इसको कहा जाता है बेहद का वैराग्य। अभी समय प्रमाण बेहद के वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो। **बिना बेहद के वैराग्य वृत्ति के सकाश की सेवा हो नहीं सकती। फालो फादर करो।** साकार में ब्रह्मा बाप रहा, निराकार की तो बात छोडो। साकार में सर्व प्राप्ति का साधन होते हुए, सर्व बच्चों की जिम्मेवारी होते हुए, सरकमस्टांश, समस्यायें आते हुए पास हो गये ना! पास विद ओनर का सर्टीफिकेट ले लिया। **विशेष कारण बेहद की वेराग्य वृत्ति।** अभी सूक्ष्म सोने की जंजीर के लगाव, बहुत महीन सूक्ष्म लगाव बहुत हैं। कई बच्चे तो लगाव को समझते भी नहीं हैं कि यह लगाव है।

समझते हैं - यह तो होता ही है, यह तो चलता ही है। मुक्त होना है, नहीं। लेकिन ऐसे तो चलता ही हैं। **अनेक प्रकार के लगाव बेहद के वैरागी बनने नहीं देते हैं।** चाहना है बनें, संकल्प भी करते है - बनना ही है। लेकिन चाहना और करना दोनों का बेलेन्स नहीं है। चाहना ज्यादा है, करना कम है। करना ही हैं - यह वैराग्य वृत्ति अभी इमर्ज नहीं है। बीच-बीच में इमर्ज होती है, फिर मर्ज हो जाती है। समय तो करेगा ही लेकिन पास विद ओनर नहीं बन सकते। पास होंगे लेकिन पास विद ओनर नहीं। समय की रफ्तार तेज है, पुरुषार्थ की रफ्तार कम है। **मोटा-मोटा पुरुषार्थ तो है लेकिन सुक्ष्म लगाव में बंध जाते है।**

बापदादा जब बच्चों के गीत सुनते हैं - उड आयें, उड आयें... तो सोचते हैं उडा तो लें लेकिन लगाव उडने देंगे या न इधर के रहेंगे न उधर के रहेंगे? अभी समय प्रमाण लगाव-मुक्त बेहद के वैरागी बनो। मन से वैराग्य हो। प्रोग्राम प्रमाण वैराग्य जो आता है वह अल्पकाल का होता है। चेक करो - अपने सूक्ष्म लगाव को। मोटी-मोटी बातें अभी खत्म हुई हैं, कुछ बच्चे मोटे-मोटे लगाव से मुक्त हैं भी लेकिन सूक्ष्म लगाव बहुत सूक्ष्म हैं, जो स्वयं को भी चेक नहीं होते हैं। (मालूम नहीं पडते हैं)। चेक करो, अच्छी तरह से चेक करो। सम्पूर्णता के दर्पण से लगाव को चेक करो। यही ब्रह्मा बाप के स्मृति दिवस की गिफ्ट ब्रह्मा बाप को दो। **छोडो, सब किनारे छोडो। मुक्त हो जाओ।**

**अभी तक नहीं हुआ हैं।**

⇨ **दादी ने कहां हम सब दादीयां सदैव साथ हैं, चले नहीं गये। सभी वतन (परमधाम) साथ जायेंगे।**

**5-9-07**

तो बाबाने कहां सचमुच हर ब्राह्मण आत्मा के दिल में जो बाबा के प्रति दादियों के प्रति स्नेह हैं, ईस स्नेह में सदा रहे तो बाबा और दादी समय प्रति समय बहुत अच्छा अनुभव कराते रहेंगे। ईससे सदा निर्विध्न बनते जायेंगे, उडते और उडाते रहेंगे। दादी ने विशेष तीन बातें कहीं (१) एक तो कहां बाबा से सच्चा स्नेह रखना (२) बडो को रिस्पेक्ट देना (३) ब्राह्मणों के संगठन को मजबुत रखते हुए बाबा के कार्य में तत्पर रहना तो बहुत जल्दी विश्व में बाबा को प्रत्यक्ष कर सकेंगे।

**6-9-07**

⇨ मेरा नंबरवन मुरब्बी बच्चा हैं। ब्रह्मा बाप तो फिर भी बाप हैं ना लेकिन बच्चें के रुपमें मुरब्बी बच्चा मेरा दिलतख्तनशीन बच्चा हैं, खूब स्वागत करो।

⇨ बाबाने दादी को कहा ओ मेरे वफादार, फरमानवरदार, ईमानदार, सुपात्र और सबूत देने वाले बच्चें, बाबाने आपको ईनाम दिया हैं - आप कहां भी रहेंगी तो वतनमें आती जाती रहेंगी। तो दादीने कहा बाबा यही ईनाम मुझे चाहिए। आप कहा भी मुझे भेजें मैं वतनमें आती रहुंगी। तो बाबा ने कहा बच्ची न वतन को छोडना, न मधुबन को छोडना, दोनों ही स्थान पर आते चक्कर लगाते रहना। तो दादी ने कहा मैं तो निमित्त मात्र जा रही हूं। तो बाबाने सुनाया, दादी बच्चें के रुप में जायेंगी, लेकिन जहां जा रही हैं ना उनको स्वप्न में भी नहीं हैं कि बच्चा हो सकता हैं। भक्त हैं और थोडे आधी लाईफ वाले हैं, बच्चें पैदा करनेवाली लाईफ से थोडा बडी आयु के हैं। इसलिए

रही। और दादी का मुरली से भी प्यार, सेवा से भी प्यार और बाप से भी प्यार था।

⇨ जो दादी ने करके सिखाया, दिखाया, उस कदम के पिछाडी कदम रखते अपने आपको भी सम्पन्न, कर्मातीत बनाओ और जो बाबा और दादी का कार्य रहा हुआ हैं उसको भी जल्दी-जल्दी सम्पन्न करो क्योंकि अभी तो स्थापना के लिए नया फोर्स, डबलफोर्स हो गया हैं ना, वह कार्य करेगा। ईसलिए बच्चों को कहना कि अभी अलर्ट रहकर ओलराउन्ड सेवा में रहते अपना भी, अन्य आत्माओं का भी भाग्य बनाओं।

**3-9-07**

⇨ दादी ने बोला कि अभी तो मैं पूरे विश्व की आत्माओं के पास जाकर के स्नेह शक्ति दे रही हूं और जो बाबाने हमें ईतना कार्य दिया हैं, वो अभी बहुत जल्दी-जल्दी पूरा करना हैं।

⇨ बहुत अच्छी तरह से बाबा सभी स्थानों पर सेवा करा रहा हैं। एडवान्स पार्टी वाले भी सभी दादी को मिल रहे हैं और अपनी अपनी सेवायें बता रहे हैं। और और भी प्रोग्राम बता रहे हैं कि कैसे-कैसे अभी सेवायें करनी हैं। तो बस, वतनमें वही सब कुछ चल रहा हैं।

**4-9-07**

⇨ बाबाने कहां देखो बच्ची साकार में तो कई लोग जानते थे, कई नहीं जानते थे, ब्रह्माकुमारीयों को भी नहीं जानते थे, दादी क्या हैं यह भी नहीं जानते थे। पर दादी जब गई तो टी.वी. द्वारा साइंस के साधनों द्वारा कितनी आत्माओं की सेवा हुई, अज्ञानी आत्माओं ने भी दादी को देखा। वैसे शिवबाबा को तो कोई देख नहीं सकता लेकिन दादी का रुप देख करके भी लोगों को यही लगता हैं कि वास्तव में ब्रह्माकुमारी संस्था कुछ हैं। तो दादी अभी बाबा के पास वतन में बैठी हैं, तो बाबा बच्ची के बहुत बडे रुप से ऐसा उंचा कार्य करायेगा जो

दादीजी का क्लास
(जुलाई-2000)

# अब घर चलने की तैयारी करो

## उपराम रहो - बेहद के वैरागी बनो

⇨ सारे दिनमें 4 प्रहर, 6-6 घंटे की होती हैं तो एक प्रहर का यह पुरुषार्थ हो। इसका हर एक कंगन बांधो। जैसे बाबाने कहा हैं जैसे सुबह 4 से 8 बजे तक किसी विशेष व्यवहार में नही आओ, उस समय मौनमें रहो, फिर रात्रि के समय भी मौनमें रह सकते हो। इसलिए हमारा विचार हैं कि खास 21 दिन का ऐसा प्रोग्राम बनाओ। हम सहजयोगी हैं लेकिन हमें भी स्वयं के संस्कारो को परिवर्तन करने के लिये योग-साधना जरुर करनी चाहिए। हम करेंगे तो हमे देख दूसरे करेंगे।

⇨ आप सबको एक संकल्प सुनाती-पता नहीं आपको भी आता हैं या नहीं। मुझे तो रोज आता जैसे बाबा कानों में कह रहा हैं-बच्ची एवररेडी हो ! ड्रामा को भी देखते, ज्ञान के हिसाब से भी अभी 5000 वर्ष का चक्र पूरा हो रहा हैं। तो यही संकल्प आता कि अभी टू लेट का बोर्ड लगने वाला हैं। यह भी दिखाई देता कि अब धर्मराज का पार्ट भी जल्दी ही खुलने वाला हैं। एडवान्स पार्टी भी जा चुकी हैं, उसकी भी तैयारियां पूरी हो चुकी हैं। सभी महारथियों को बाबाने अचानक बुला लिया। अब हम सबको भी आखिर यहां कब तक रहना हैं। सभी दादियों की वानप्रस्थ अवस्था भी देख रहे हो। ज्ञान सरोवर, शान्तिवन, बाबा के एशलम स्थान अथवा अंतिम यात्रा के स्थान भी बनकर तैयार हो गये हैं। यह भी अन्तमें सबको योग की किरणें देंगे। एशलम बनेंगे।

तो रोज जैसे बाबा यह महावाक्य कानों में कहता हैं कि बच्चें अब अंन्तिम यात्रा की तैयारी करो। अपने सर्व साथियों को तैयार करो। सेवायें तो बाबा आपे ही करता कराता रहता हैं। सेवा तो चरणो में आपे ही आनी हैं। सर्विस के पीछे तो बहुत प्लैन प्रोग्राम बनायें, पुरुषार्थ किया। सर्विस तो चलती ही रहेगी। तो जैसे सर्विस के पीछे जी-जान लगाया ऐसे अब अपनी स्थितियां बनाओ। अव्यक्त स्थिति में स्थित रहने का अभ्यास करो। अब हर एक रेडी हो जाओ। अब सर्विस प्लैन की मीटिंग नहीं लेकिन अपनी उंची स्व-स्थिति बनाने की मीटिंग करो। ऐसी उंची स्थिति हो तो जो भी छोटी-मोटी बातें आती हैं, वह सब आपे ही खत्म हो जायेंगी। यही रिटर्न हमारा बाबा तक पहुंचे। इसके लिए उपराम रहो, वैरागी बनो। अन्डरग्राउन्ड चले जाओ। अलबेलेपन को दिल से त्याग दो। एकाग्रता का अभ्यास करो। हमें यह बार बार बाबा की आवाज सुनाई देती हैं, ऐसे आप सबको भी कानों में आवाज आ रहा हैं ? तो जैसे बाबा इशारा कर रहा हैं - बच्चें अब उपराम बनो। ऐसा वैराग्य आता हैं? लगता हैं कि अब जीवन की यह अंतिम यात्रा हैं । ऐसी फीलिंग आती हैं ? हमें तो रोज आती हैं। इसलिए ख्याल चलता हैं कि अब बाबा के सभी ब्राह्मण बच्चें व्यर्थ से मुक्त हो उपराम बन जाए। अपने संकल्प, श्वांस समय को सफल कर ले, व्यर्थ नहीं गंवाये।



ईशारा देता हैं कि बच्चें भी सम्पूर्ण शक्ति से, एकाग्र बुद्धि से समय को समीप लाने वाले बने। जो बाबा चाहता हैं कि बच्चें सम्पन्न बने, सम्पूर्णताकी ओर चले, तो जो कार्य मुश्किल लगता था, अभी वह कार्य सहज होता जायेगा लेकिन बच्चों को थोडा एलर्ट रहना होगा फिर स्थापना का कार्य देखना कितनी जोर पकडता हैं। तो अभी दुनिया में भी हलचल बढती जायेगी और आप लोगों को भी अचल-अडोल स्थिति में एकनामी होकर चलना होगा।

**31-8-07**

- बाबा ने कहां जो भी विश्व परिवर्तन के कार्य में लगे हैं उनको गाईडियन्स की, फोर्स भरने की जरुरत हैं, दादी उनमें विशेष फोर्स भर रही थी, गाईड कर रही थी, जिससे उनको लगता था कि अभी मुझे बहुत कुछ कार्य करना हैं। दूसरी ओर विश्व परिवर्तन के जो निमित्त हैं उनको दादी टच कर रही थी। तीसरा -दादीने विश्व का भ्रमण किया तो जो आत्मायें खाली-खाली अनुभव करती हैं, उनके सामने दादी जाती और रहमदिल बनकर उन्हें कुछ न कुछ शक्ति, उमंग दे रही थी।
- मेरे सेवा के सभी साथी अपने को ऐसी ही स्पीड में लाकर हद की बातों से उपर उठे और यह कार्य तीव्र गति से करें ।

**1-9-07**

- ईसी प्रकार यह शांतिवन दादीजी की तपस्या और प्रकाश का स्थान बन जायेगा। दादी का कमरा, बाबा का कमरा, कोटेज का यह स्थान भी प्रकाशमय और शक्तिशाली बन जायेगा। जिससे ब्राह्मण परिवार और आने वाली आत्माओं को प्रकाशमय और शक्तिशाली वायुमण्डल का खिंचाव होगा।

**2-9-07**

- जैसे-जैसे कर्मातीत अवस्था के नजदीक आती गई यह सब संबंध खतम होते गये, बस आप और बाप, यही स्मृति दादी की अंत तक

गया, और ईस बच्ची ने फिर (1)विश्व सेवा में सम्पूर्ण सहयोग देकर सारे विश्व में शांति का संदेश फैलाया। तो यह बच्ची सेवा के निमित्त बनी, (2) जो बाबाने कहां, जैसा बाबा ने कहां, जब कहां बच्चीनें हां जी का पाठ पक्का किया और (3) शुरु से लेकर लक्ष्य रखा कि मुझे बाप समान बनना हैं। यह बच्ची का अंदर ही अंदर पुरुषार्थ चलता रहा। (4) बच्ची ने अपनी सत्यता, पवित्रता, प्यार, शांति और रहम की दृष्टि से सारे ब्राह्मण परिवार को एक सूत्र में बांधकर रखा। हर एक के दिल में यही रहां कि जो दादी कहें। (5) तो ईतना बडा कार्य बाबा ने इस बच्ची से कराया और बच्ची ने किया, (6) निश्चय के आधार पर बच्ची ने हर कार्य में, हर सेवा में, हर श्वास में, हर संकल्प में विजय प्राप्त की और (7) बाप से अति प्यार होने के कारण बच्ची ने त्याग भी बहुत किया (8) कुर्बानी भी बहुत की (9) न अपने शरीर पर (10) न किसी पदार्थ पर (11) न किसी वैंभवो पर... कहां भी बच्ची की दृष्टि नहीं जाती थी।

- ⇨ हमनें कहां बाबा अभी **दादी जानकी को मुख्य बनाया गया हैं।** तो बाबा ने कहां देखो त्रिमूर्ति का गायन हैं, त्रिमूर्ति को पहले से ही आप दिखाते थे, दादी जानकी, दादी गुल्जार और दादी तीनों ही सदा साथ रहे हैं।
- ⇨ फिर बाबा नें कहां **जानकी बच्ची** को तो अभी **डबल सेवा करनी पडेगी।** अभी तो डबल ताज हो गया।
- ⇨ **तो समय को समीप लाने के लिए बाबा ने बच्ची को (दादीजी को) अपना साथी बनाया हुआ हैं।** तो चारों तरफ चक्कर लगाकर बच्ची कार्य को सम्पन्न करेगी। **अभी तो एक तरफ प्रकृति की हलचल, दूसरे तरफ माया के भिन्न स्थूल सूक्ष्म रुप, तीसरे तरफ राजनीति की हलचल, सायन्टिस्ट की हलचल यह सब हलचल अभी शुरु होगी क्योंकि अभी डबल पावर काम करेंगी ईसलिए बाबा बच्चों को भी**



## बापदादा के गंभीर ईशारे -समय की समीपता
## 4-9-05 से 28-3-06

**4-9-05**

- ⇨ अपने आपको **रियलाईझ** करो। **रियलाईझ** अर्थात मैं जो हूं, जैसा हूं, वेसे अपने को समझना। आत्मा हूं, यह कोमन हैं, लेकिन चलते फिरते महेसूसता आत्म अभिमानी की रहेती हैं ? ईसको कहेंगे **रियलाईझेशन।** संस्कार हैं, संस्कार का ज्ञान हैं, नोलेज हैं, संस्कार समाप्त हुए हैं ? परिवर्तन हुआ हैं या नहीं ? यह अपने को मेहसूस हो, यह नहीं हैं, यह ठीक हैं, यही नही ठीक हैं। **दूसरा महेसूस करायेंगा तो महेसूस नहीं होता हैं।** तो अपने आपको **रियलाईझ** करने का पाठ पढाना। जैसे सप्ताह कोर्स करते हो ना, आत्मा, परमात्मा, योग, ड्रामा ऐसे अपने आपको **रियलाईझ** करो। **अभी रियलाईझेशन का समय हैं।** जो बाप चाहता हैं वह कर रहां हुं ? **सम्बंध सम्पर्क में भी रियलाईझ करो, शुभ भावना, शुभ कामना हैं ?** ठीक हैं। **रियलाईझेशन कोर्स अपने आपका करो। दूसरा नहीं करा सकता यह।** सब कोर्स किया **अभी लास्ट कोर्स हैं रियलाईझेशन कोर्स। चलाना नहीं अपने को, चलता हैं, हैं ही। समय धोखा नहीं दे देवे ना ! तो साथ चलनेवाले हो ना ! बीचमें अटकनेवाले तो नहीं हो ना !** तो **रियलाईझेशन** कोर्स अपने आपका शुरु करो। एक-एक बात में **रियलाईझ** करो।

**21-10-05**

- ⇨ बापदादा की यही शुभ आशा हैं कि अब समय को देखते हुए जो महारथी समजते हैं अपने को, उन्हों की स्टेज तो **95** परसेन्ट होनी चाहिए। होनी चाहिए ना ! आपभी **75** समजते हो ? अच्छा कल **विनाश** हो जाए तो ? तो **75** परसेन्ट में जायेंगे ना ? परसो अगर **विनाश** करे, तो **85** तक होंगे ?

⇨ मीटिंग तो बहुत करते हो। बापदादा देखते हैं मीटिंग, सीटिंग, मीटिंग-सीटिंग। लेकिन **अब ऐसी मीटिंग करो, कि कब तक सम्पन्न बनेंगे** ? और सब फंकशन मनाते हो, डेट फिकस करते हो, फलाना प्रोग्राम फलानी डेट, **ईसकी डेट नहीं हैं** ? जितने साल चाहिए उतने बताओ। क्यों ? बापदादा क्यों कहते हैं ? **क्योंकि बापसे प्रकृति पूंछती हैं कि कब तक विनाश करे** ? तो बापदादा क्या जवाब दे। बापदादा बच्चों से ही पूछेंगे ना। **कब तक** ? आज की विशेष टोपिक हैं **कब तक?**

⇨ बापदादा उमंग-उल्हास दिलाता हैं। माया देखती हैं उमंग उल्हासमें हैं तो कुछ न कुछ कर लेती हैं क्योंकि **उसका भी अभी अंतिम काल नजदीक हैं ना।**

⇨ समय की गति को ड्रामा अनुसार स्लो करना पडता हैं। होना चाहिए क्रियेटर को तीव्र, क्रियेशन को नहीं। लेकिन अभी के प्रमाण **समय तेज जा रहा हैं। प्रकृति एवररेडी हैं सिर्फ ओर्डर के लिए रुकी हुई हैं।** ड्रामा का समय ही ओर्डर करेगा ना। स्थापना वाले एवररेडी नहीं होंगे तो विनाश के बाद क्या प्रलय होंगी ? **तो स्थापना के निमित्त बने हुए अभी समय प्रमाण एवररेडी होने चाहिए।** बापदादा यहीं देखने चाहते हैं, जैसे ब्रह्मा बाप अर्जुन बना ना, एक्जाम्पल बना ना। ऐसे **ब्रह्मा बाप को फोलो करनेवाले कौन बनते हैं? स्वयं को भी देखो, समय को भी देखो।**

**15-11-05**

⇨ **सभीने वायदा तो किया हैं ना ! कि साथ रहेंगे, साथ चलेंगे** ? किया हैं, वायदा किया हैं ? **साथ चलेंगे या पीछे पीछे आयेंगे** ? जो साथ चलने के लिये तैयार हैं वह हाथ उठाओ। तैयार हैं **अर्थात बाप समान हैं।** कौन साथ चलेगा ? समान साथ चलेगा ना ! **तो चलेंगे** ? एवररेडी? **एवररेडी** ? कल चलने के लिए ओर्डर करे, चलेंगे ? अच्छा



⇨ यह मेरी तरफ से सभी मेरी सखियों को, मेरे भाईयों को संदेश देना तो **अभी बहुत टाईम बीत गया, अभी घर चलना हैं,** तो दीदी ने बीच में ही कहां, यह तो मेरी बात आपने कह दी, मुझे तो घर बहुत याद आता था मेरा तो गीत ही यही था कि **अब घर जाना हैं। तो जो भी एडवान्स पार्टी वाले थे, उन सबने भी कहां कि हम सब भी आपको कहते हैं, हम सब आपका इंतजार कर रहे हैं, मुक्तिधाम का गेट भी आप सबका इंतजार कर रहा हैं इसलिए दुआयें लो और यही सहज पुरुषार्थ करके अभी जल्दी-जल्दी वतन में आ जाओ।**

**28-8-07**

⇨ यज्ञ की पालना और उसका विस्तार और दूसरी तरफ **राजधानी की स्थापना में दादी का विशेष पार्ट हैं।** जैसे ईतने वर्ष यज्ञ के पालना की निमित्त बनी, ऐसे राजधानी की जो स्थापना हो रही हैं, उसका प्लैन दादी को बाबा के साथ करना हैं। तो दादीने कहां कि **बाबा के जो भी अनन्य बच्चें हैं सबके पार्ट में परिवर्तन तो आना ही हैं।** जैसे दादी हमेशा कहती थी "**बाबा यह करवा रहा हैं, बाबा ने यह किया**"।

**29-8-07**

⇨ जो भी मेरे संकल्प बाकी रहे हैं वह बाबा पूरा करने के प्लैन बना रहा हैं। बाबा ने कहां ईन दिनों में बहुत कुछ होने वाला हैं। बडे बडे सायन्टिस्ट, विद्वान, बडे बडे लोगों के पास दादी को सब तरफ जाना हैं। तो दादी ने बाबा को बिजी कर दिया हैं। दादी को बहुत फास्ट सब कुछ करना हैं तो वह प्लान बन रहा हैं। यह विशेष समय चल रहा हैं जिसमें बहुत कुछ होगा। उसके बाद आप बच्चों को थोडी मेहनत से बहुत सफलता का अनुभव होगा।

**30-8-07**

⇨ बाबा मुस्कराये और कहां कि देखो मम्मा ने यज्ञ स्थापना में अपना सब प्रकार का सहयोग दिया, जिससे यज्ञ कहां से कहां तक पहुंच

परिवर्तन करना हैं, घर जाना हैं, घर जाना हैं तब आप देखेंगे चारों तरफ का आवाज, सबका एक संकल्प सब की अवस्था में कितना जल्दी परिवर्तन लाता हैं।

**अभी चारों तरफ से बच्चोंके अंदर उपराम, घर चलने की भावना जब एकदम पक्की हो जायेंगी तब ये कार्य शुरु हो जायेंगा।** इसलिए बच्चों को कहना कि आज के दिन **मम्मा की सौगात हैं कि उपराम बनो, घर चलने की तैयारी करो। जितना उपराम बनते जायेंगे उतना घर नजदीक आता जायेंगा।**

**27-8-07** (दादीजी के अव्यकत होने के बाद)

⇨ **बाबा ने कहां अभी बच्ची समय को समीप लाना हैं।** बहुत दुःख, **भ्रष्टाचार अति में जा रहा हैं,** और बच्चें जो हैं वह अभी भी छोटी-छोटी बातों में जैसे कोई गुडियों का खेल करे ना, ऐसे छोटी-छोटी बातो में समय लगा रहे हैं।

⇨ **बाबा अभी बार-बार सभी बच्चों को कहते हैं, अचानक और एवररेडी।** दादी की दोंनो बातो में विशेषता देखी, एक एक्झाम्पल दादी का देखा, कुछ याद आया ? कोई बात याद आई ? अपने शरीर से भी न्यारी हो गई। और साथ साथ **अचानक** ही दादी चली गई।

⇨ जैसे ब्रह्माबाबा कहता हैं प्यार की निशानी बाप समान बनो। ऐसे आप सभी कहते हो दादी से बहुत प्यार हैं, तो दादी भी दो शब्द बोलने चाहती हैं। दादी ने कहां कि **जैसे मैंने बाबा को फोलो करते स्वमान में रहकर के छोटे-बडे को सम्मान दिया, दुआयें ली, आज दुआओं का ईनाम बाबा मुझे दे रहा हैं।** तो आप सभी भी यह दो शब्द स्वप्न में भी नहीं भूलना कि स्वमान में रहना हैं और **हर छोटे-बडे को सम्मान** देके खुद भी परिवर्तन होना हैं और औरों को भी परिवर्तन करना हैं।



प्रवृत्तिवाले चलेंगे ? बच्चें नहीं याद आयेंगे ? मातायें चलेंगी ? **टीचर्स को सेन्टर याद आयेगा, जिज्ञासु याद आयेंगे ?**

⇨ अभी सभी की कम्पलेन विशेष एक ही रह गई हैं, **संस्कार नहीं बदलते, संस्कार नहीं बदलते।** तो **70**वे वर्ष में कुछ तो कमाल करेंगे ना। तो यह परिवर्तन की विशेषता दिखाओ।

**30-11-05**

⇨ बापदादा यही चाहते हैं, पूंछते हैं ना बाप क्या चाहते हैं हमसे ? **तो बापदादा यही चाहते हैं कि समय से पहले सब एवररेडी बन जाओ। समय आपका मास्टर नहीं बने।** समय के मास्टर आप हो ईसलिए **यही बापदादा चाहता हैं कि समय के पहले सम्पन्न बन विश्व की स्टेज पर बाप के साथ साथ आप बच्चें भी प्रत्यक्ष हो।**

**15-12-05**

⇨ विश्व के आगे ताली बजे। सब के मुख से यह आवाज निकले, हमारे ईष्ट आ गये। हमारे पूज्य आ गये। लक्ष्य पक्का हैं ना ! **अभी सभी इंतजार कर रहे हैं, अभी ईन्हों का ईंतजार समाप्त करो। प्रत्यक्ष होने का ईंतजाम करो। देखो प्रकृति भी अभी कितनी तंग हो रही हैं।** तो प्रकृति को भी शांत बना दो। **आप प्रत्यक्ष हो जायेंगे तो विश्व शांति स्वतः हो जायेंगी।**

⇨ अभी पीछे आनेवाले भी ऐसा लक्ष्य रखो **समय कम हैं** ईसलिए **तीव्र पुरुषार्थ** द्वारा नंबर आगे ले सकते हो। **अभी भी टू लेट का बोर्ड नहीं लगा हैं, लेट का लगा हैं।** ईसलिए जितना पुरुषार्थ करना चाहो उतना आगे बढ सकते हो। **तीव्र पुरुषार्थ** करना हैं ना ! **अभी ढीले पुरुषार्थ का समय गया, चलने का गया, अभी उडने का समय हैं। तो डबल लाईट बनके उडो।** जो भी बनने चाहो, बन सकते हो। **उलहना नहीं देना** -बाबा हमकों पीछे बुलाया, **अभी भी डबल लाईट बनके उड सकते हो।**

**31-12-05** (होमवर्क न करनेवालों की सजा)

➪ तो अभी यह लास्ट टर्न में शुरु हो जायेगा। तो तीन मास बापदादा देते हैं, ठीक हैं देवे ? **होमवर्क** देंगे। क्योंकि यह बीच बीच का होमवर्क भी लास्ट पेपर में जमा होगा। तो तीन मासमें हर एक अपना चार्ट चेक करना। **तीन मास कोई भी पुराना संस्कार वार नहीं करे। अलबेले नहीं बनना, रोयल अलबेलापन नहीं लाना, हो जायेगा।** बापदादा से बहुत मीठी मीठी बातें करते हैं, कहते हैं बाबा आप फिकर नहीं करो, हो जाउंगा। बापदादा क्या करेगा ? सुनकर मुस्करा देता हैं। *लेकिन बापदादा ईन तीन मास में अगर ऐसी बात की तो मानेगा नहीं। अगर नहीं करेंगे तो क्या करे ? वह भी बता दो। फिर बापदादा की सीजन में एक बार आने नहीं देंगे।* **क्योंकि बापदादा देख रहे हैं कि समय आपका इंतजार कर रहा हैं। आप समय का इंतजार करनेवाले नहीं हो, आप इंतजाम करनेवाले हो, समय आपका इंतजार कर रहा हैं। प्रकृति भी, सतोप्रधान प्रकृति आपका आहवान कर रही हैं।** तो तीन मास में अपनी शक्तिशाली स्टेज में रहे हुए **संस्कार को परिवर्तन करना।**

➪ आप बाप समान बन गये हो ? पर्दा खोले ! कि पर्दा खोलेंगे तो कोई कंघी कर रहा हैं, कोई फेस को क्रीम लगा रहा हैं, अगर **एवररेडी हो, संस्कार समाप्त हो** गये तो बापदादा को पर्दा खोलने में क्या देरी लगेंगी। **एवररेडी** तो हो जाओ ना ! हो जायेंगे, हो जायेंगे कह के बाप को बहुत समय खुश किया हैं। अभी ऐसा नहीं करना। **होना ही हैं, करना ही हैं।**

➪ प्रत्यक्षता का झंडा आरंभ ही ईस्टर्न से हो, फैलेगा तो विश्वमें ही। एक-एक स्टेट में ग्रुप बनाओ, जो मन, वाणी, कर्म, सम्बंध, सम्पर्क में **तीव्र पुरुषार्थी** हो। फिर उन्हों का संगठन करो, एक दो में राय लो, दो तो हो जायेगा। करना तो पडेगा। **तीव्र पुरुषार्थ** करना पडेगा। यह





**11-4-07**

**अब तो बच्चों को तीव्रगति से सर्व आत्माओं के बढते हुए दुःख अशान्ति का निवारण कर बाप द्वारा मुक्ति का वर्सा दिलाना हैं।** इसलिए अब इस संगमयुग के हर संकल्प, हर घडी को स्व और सर्व के कल्याण में लगाना हैं। व्यर्थ नहीं जाए क्योंकि इस समय की हर घडी सारे कल्प की प्रालब्ध बनाने वाली हैं।

**6-5-07**

**समय तो अति की चैलेन्ज कर ही रहा हैं।** इसलिए अब प्रत्यक्ष प्रमाण दिखाओ जो साइन्स की शक्ति नहीं कर सकती, वह साइलेन्स की शक्ति द्वारा प्रत्यक्ष कर दिखाओ।

**21-06-07** (मम्मा स्मृति दिन निमित्त)

मम्मा ने कहा आप सबकी स्थिति... तो हमने कहां सभी तैयार हो रहे हैं। तो बाबा ने कहा कि **बाबा ने बच्चों को इशारा दिया हैं कि जो कुछ होंगा, अचानक होंगा और उसकी शुरुआत जो होंगी वो भी नेचरल केलेमिटीझ से होंगी और नेचरल केलेमिटीझ की उथल पुथल अंदर ही अंदर शुरु हो गई हैं।** उसके लिए कोई टाईम नहीं हैं, कोई मीटर नहीं हैं, कोई बटन नहीं हैं जो बाबा दबायें और ऐसा हो, ये प्रकृति का जो कुछ भी होंगा सब अचानक होंगा।

तो हमने पूछा मम्मा हमारे संगठन के पुरुषार्थ में तेजी कब आयेंगी ? तो मम्माने कहा कि अभी आप लोगों का **अटेन्शन कम हैं। बहुतो के अंदर चलता हैं कि समय आयेंगा तो हम तैयार हो जायेंगे।** आप समय का इंतजार करते हो, बार-बार पूछते हो अभी कितना समय हैं, कितना समय हैं लेकिन बाबा ने कई बार इशारा दिया हैं कि **आप घडियां हो, आप समय को नजदीक लाने वाले हो। तो आपका भी सब तरफ जब एक ही आवाज आयेंगा की परिवर्तन करना हैं,**

⇨ साथ साथ अभी समय के प्रमाण विश्व की आत्मायें जो दु:खी, अशांत हो रही है उन आत्माओं को दु:ख, अशांति से छुडाने के लिए अपनी शक्तिओं द्वारा सकाश दो। तो अभी मनसा सेवा करो।

⇨ एवररेडी हो ना? कल भी कुछ हो जाए, एवररेडी हैं? कल भी हो जाए तो? जितने भी वर्ग आये हो, एवररेडी। क्योंकि समय आपका इंतजार कर रहा हैं। बापदादा मुक्ति का गेट खोलने का इंतजार कर रहा हैं। एडवान्स पार्टी आहवान कर रही हैं। क्या नहीं कर सकते हो? मास्टर सर्व शक्तिवान तो हो ही। दृढ संकल्प करो यह करना है, यह नहीं करना हैं, बस।

⇨ बच्चे हाजिर है, तो बाप तो हाजिर है ही। न बाप बच्चों से दूर हो सकता, न बच्चे बापसे दूर हो सकते। वायदा है साथ हैं, साथ चलेगें, आधा कल्प ब्रह्मा बाप के साथ रहेंगे।



आवाज कोई भी रेडियो खोले, कोई भी टी.वी. का स्वीच खोले तो यह आवाज आवे " हमारा शिवबाबा आ गया "' तब कहेंगे प्रत्यक्षता का झंडा लहराया। यह धूम मचनी चाहिए, आ गया, आ गया, आ गया।

**18-1-06**

⇨ लीकेज विशेष दो बातों की हैं -वह दो बातें हैं -संकल्प और समय वेस्ट जाता हैं। क्योंकि जानते हो कि यही थोडा सा समय हैं पुरुषोत्तम कल्याणकारी जमा करने का समय हैं। अब नहीं तो कब नहीं, यह हर घडी याद रहे।

(कम से कम 108 रत्न तो सफलतामूर्त की सेरीमनी मनायें)

⇨ तो ईस बारी सिर्फ सर्विस के प्लैन की मीटिंग बापदादा नहीं देखने चाहते, सर्विस के प्लैन बनाओ लेकिन मीटिंग में सफलता की सेरीमनी का प्लैन बनाओ। बहुत सेरीमनी कर ली अब सफलता की सेरेमनी की डेट फिक्स करो। चलो सोचते हैं कि सभी कैसे होंगे ! *बापदादा कहते हैं कमसे कम* 108 *रत्न तो सफलतामूर्त की सेरीमनी मनायें। एक्जाम्पल बनें। कोई संस्कार नहीं रहेगा, कोई कमजोरी नहीं रहेगी। ईसमें करना पहले मैं। ईसमें दूसरे को नहीं देखना, पहले मैं।*

⇨ वर्तमान समय को तो देख रहे हो, दिन प्रतिदिन चारो ओर मनुष्य आत्माओं में निराशा बहुत बढ रही हैं। चारो ओर मनुष्य आत्माओं के मनमें आशा का दिपक जग जाये। वायुमण्डल में कमसे कम यह आशा का दिपक जग जाये तो अब विश्व परिर्वतन हुआ की हुआ। गोल्डन सबेरा आया की आया। क्योंकि समय अचानक होनेवाला हैं।

**3-2-06**

⇨ बापदादा आजकल के समय की समीपता प्रमाण बार बार अटेन्शन खिंचवा रहे हैं कि सम्पूर्ण पवित्रता के हिसाब से व्यर्थ संकल्प, यह भी संम्पूर्णता नहीं हैं।

⇨ कार्य बहुत अच्छा हैं। जो कार्य कर रही हैं ब्रह्माकुमारीयां, वह कार्य कोई कर नहीं सकता, परिवर्तन कराती हैं। लेकिन **परमात्मा बोल रहा हैं, परमात्मा से वर्सा लेना हैं,** इतना नजदीक नहीं आते। लेकिन **परमात्मा प्रत्यक्षता,** अगर समज सकते कि परमात्मा का ज्ञान हैं तो रुक सकते हैं क्या ! **जैसे आप भागकर आ गये हो ना। ऐसे भागेंगे।**

⇨ **परमात्मा आ चुका हैं।** बाप को प्रत्यक्ष कौन सा जोन करता हैं, वह बापदादा देख रहे हैं। बहुत समय से प्रयत्न कर रहे हैं, यही हैं, यही हैं, यही हैं, यह आवाज फैलाने का। **अभी हैं यह भी हैं, यही हैं नहीं हैं।** यह भी हैं, यह तो बहुत सुन लिया। **जैसे आपके मनमें बस बाबा, बाबा, बाबा स्वत: याद रहता हैं ऐसे उनके मुखसे निकले हमारा बाबा आ गया। वह भी सभी मेरा बाबा, मेरा बाबा, यह आवाज चारों कोनों से निकले,** लेकिन **शुरुआत तो एक कोने से होगी ना।**

⇨ कमाल यह हैं कि जैसे सायन्स प्रत्यक्ष प्रमाण दिखा रही हैं, ऐसे सायलेन्स पावर ऐसा प्रेक्टिकल में अनुभव फैलाओ जो हर एक के मुखसे निकले कि सायन्स तो सायन्स हैं लेकिन सायलेन्स अपरम अपार हैं **क्योंकि धर्मवाले और सायन्सवालें दोनों को प्रेक्टिकल में सायलेन्स का चमत्कार नहीं लेकिन सायलन्स का कार्य सिध्ध करके दिखाना पडेगा। धर्मवालों को प्रेक्टिकल में एक परमात्मा हैं और परमात्मा का कार्य चल रहा हैं यह सिध्ध करके दिखाना पडेगा। अनेक तरफ से बुध्धि हटकर एक तरफ लग जाए ।** एकाग्र बुद्धि हो जाऐ। **अभी समय की रफतार तेज जा रही हैं** तो समय के प्रमाण अभी ऐसा कोई प्लैन बनाओ **जो सबकी बुद्धि में परमात्मा के सिवाय और कुछ सूझे नहीं, मैजोरिटी के मुख से बाबा, बाबा निकले।** अभी फास्ट करना पडेगा। सायन्स भी देखो, समय को, चीजों को बिलकुल सूक्ष्म बनाती जाती हैं ना। तो सायलेन्स पावर कितना शक्तिशाली बना रही हैं। यह अनुभव कराओ। **सुनाया था तो जिसके हाथ में अखबार आये,**



**15-12-07**

⇨ बापदादा ने पहले भी सुनाया हैं कि समय की रफ्तार बहुत-बहुत तीव्र गति से आगे बढ रही हैं। पुरुषार्थ तो सब कर रहे हैं लेकिन बापदादा क्या देखने चाहते हैं? हर बच्चा तीव्र पुरुषार्थी। तीव्र पुरुषार्थी के लक्षण विशेष दो है - **एक नष्टामोहा, दूसरा एवररेडी।** सबसे पहले नष्टामोहा, इस देहभान, देह अभिमान से। और एवररेडी, एवरेरडी का अर्थ है - मन-वचन-कर्म, संबंध सम्पर्क में समय का ओर्डर हो अचानक तो एवररेडी और अचानक ही होना है। **जैसे अपनी दादी को देखा अचानक - एवररेडी। इसलिए बापदादा समय की समीपता का बार बार इशारा दे रहा है। स्व पुरुषार्थ का समय बहुत थोडा है,** इसलिए अपने जमा के खाते को चेक करो। तीन विधियां खजानो को जमा करने की पहले भी बताई है, फिर से सुना रहे हैं। उन तीनों विधियों को स्वयं चेक करो। एक है स्वयं के पुरुषार्थ से प्रारब्ध का खजाना जमा करना। प्राप्तिओं का खजाना जमा करना। दूसरा है - संतुष्ट रहना, इसमें भी सदा शब्द ऐड करो और सर्व को संतुष्ट करना, इससे पुण्य का खाता जमा होता है। और यह पुण्य का खाता अनेक जन्मों के प्रारब्ध का आधार रहता है। तीसरा है सदा सेवामें अथक, नि:स्वार्थ और बडी दिल से सेवा करना, इससे जिसकी सेवा करते है उनसे स्वत: ही दुआयें मिलती हैं। **यह तीन विधियां है, स्वयं का पुरुषार्थ, पुण्य और दुआ।** यह तीनों खाते जमा है? तो चेक करो क्योंकि अचानक कोई भी पेपर आ जाए, क्योंकि **आजकल के समय अनुसार प्रकृत्ति के हलचल की छोटी छोटी बातें कभी भी आ सकती है।** इसलिए कर्मो के गति का नोलेज विशेष अटेन्शन में रहे।

➪ तो विशेष आत्माओं की पहली निशानी है तीव्र पुरुषार्थी। सोचा और किया। ऐसे नहीं करेंगे, हो जायेगा... होना तो है ही... नहीं। **करना ही है। उडना ही है। बाप समान बनना ही है, ईसको कहते है तीव्र पुरुषार्थी। अभी समय तीव्र समीप आ रहा है। समय में तीव्रता आ गयी है लेकिन दुख के अशांति के समय को समाप्त करनेवाले, उन्हों को तो समय से भी तीव्र बनना ही है।**

➪ आखिर तो सभी वर्ग वाले मिलकरके कहें हम सब एक बाप के एक है। ईस विश्व की स्टेज पर एक है, एक मत है, एक के ही है यह आवाज फैले।

➪ गरीबी बढती जाती है और गरीबी के समय अगर सहज साधन मिल जाए तो सभी खुश होते है।

➪ जो भी आप निमित्त है, उन्हों को विशेष ईस समय यह अटेन्शन रखना है कि संतुष्ट रहना तो है हीं लेकिन संतुष्ट रहे, वायुमण्डल संतुष्ट रहे उसके लिए आपस में कोई न कोई प्लैन बनाते रहना।

➪ असंतुष्टता का वायुमण्डल में प्रभाव नहीं हो क्योंकि आजकल संतुष्टता सबको चाहिए। लेकिन हिम्मत नहीं है। ईसलिए बीच बीच में कुछ न कुछ एसा परवश होके कर लेते है लेकिन **उन्हों को भी कुछ शिक्षा, कुछ क्षमा, कुछ रहम, कुछ आत्मिक स्नेह उसकी आवश्यकता है।**

➪ बाकी विशेषता सबमें है। छोटे से छोटा जो प्यादे में प्यादा है ना उसमें भी विशेषता है। **ईसलिए संगठन सभी जगह मजबुत करो,** चाहे **2** हैं, चाहे **4** हैं, चाहे **12** हैं, लेकिन दो का भी संगठन ऐसा मजबुत हो जो दोनो एकमत हो। स्वभाव एक दो में श्रेष्ठ बनाए, मिलाने की कोशिश करो। जैसे दादी को याद करते है ना, क्यों याद करते हो? उसकी विशेषता सबको अपनापन दिया। अपनापन महसूस हो, ऐसे नहीं यह तो पता नहीं कौन है, क्या है। एक परिवार हैं ना! तो आप सभी भी अपने अपने स्थान पर रहते भी अपनापन दे सकते हो ।



**जिसके रेडियो का स्वीच खुले, टी.वी. का स्वीच खुले आवाज आये हमारा बाबा आ गया। सम्पन्न बन जायेंगे जल्दी-जल्दी तो यह कार्य भी हो जायेगा। क्योंकि कनेकशन हैं, आपका सम्पन्न बनना और प्रत्यक्षता का झंडा लहराना। ऐसे मनका झंडा शिवबाबा, शिवबाबा में एकाग्र हो जाये, आ रहा हैं, समय समीप आ रहा हैं।**

**25-2-06**

➪ **वेस्ट थोट्स का केक काटा ? काटना तो पडेगा ना ! क्योंकि साथ चलना हैं, यह तो पक्का वायदा हैं ना ! कि साथ हैं, साथ चलेंगे। साथ चलना हैं तो समान तो बनना पडेगा ना।**

➪ बापदादा का प्यार हैं ना तो बापदादा समझते हैं सब ईकट्ठे चले, कोई रह नहीं जाये। जब वायदा किया हैं, साथ चलेंगे, तो समान तो बनना ही पडेगा।

➪ चारों हल्का नहीं छोडना यह तो होता ही हैं। ईतना तो चलेगा, नहीं। **व्यर्थ संकल्प अंतिम घडी में बहुत धोखा दे सकतां हैं। क्योंकि चारों ओर अपने तरफ (१) दु:खका वायुमण्डल (२) प्रकृति का वायुमण्डल (३) आत्माओं का वायुमण्डल आकर्षण करनेवाला होगा।** अगर वेस्ट थोट्स की आदत होगी तो वेस्ट में ही उलझ जायेंगे।

➪ **ऐसा नकशा दिखाई दे कि यह दुआयें देनेवाला और दुआयें लेनेवाला ब्राह्मण परिवार हैं। क्योंकि समय भी पुकार रहा हैं, बापदादा के पास तो एडवान्सपार्टी वालों की भी दिल की पुकार हैं। माया भी अभी थक गई हैं। वह भी चाहती हैं कि अभी हमें भी मुक्ति दे दो। तो बापदादा कहते हैं, हे मास्टर मुक्तिदाता अभी सबको मुक्ति दे दो।** क्योंकि सारे विश्व को कुछ न कुछ प्राप्ति की अंचली देनी हैं, कितना काम करना हैं। **क्योंकि ईस समय, समय आपका साथी हैं, सर्व आत्माओं को मुक्ति में जाना ही हैं, समय हैं।** दुसरे समय में अगर आप पुरुषार्थ करो, तो समय नहीं हैं। ईसलिए आप दे नहीं सकते। **अब समय हैं**

ईसलिए बापदादा कहते हैं पहले स्व को मुक्ति दो, फिर विश्व की सर्व आत्माओं को प्राप्ति, मुक्ति देने की अंचली दो। वह पुकार रहे हैं, आपको क्या दु:खियों की पुकार का आवाज नहीं आता ? अगर अपनें में ही बिजी होंगे तो आवाज सुनने नहीं आता। बार-बार गीत गा रहे हैं, दुखियों पर कुछ रहम करो। अभी से दयालु, कृपालु, मर्सिफुल संस्कार बहुत काल से नहीं भरेंगे तो आपके जड चित्र में मर्सिफुल का, कृपा का, रहम का, दया का वायब्रेशन कैसे भरेगा। थोडा-थोडा और कहां बिजी हो जाते हो। अभी अपने को अपने पुरुषार्थ में समय ज्यादा नहीं लगाओ। देने में लगाओ, तो देना लेना हो जायेगा। छोटी-छोटी बातें नहीं, मुक्ति दिन मनाओं क्योंकि समय पर तो कोई भरोसा नहीं।

⇨ ऐसा दिन आना ही हैं जो आपके दिल के प्यार का वायुमण्डल सबको चुम्बक का काम करेगा और सभी अपने मुख से कहेंगे, आ गया, आ गया, हमारा बाबा आ गया। अभी तो यह झंडा लहरा रहा हैं, अभी जल्दी प्रत्यक्षता का झंडा लहरायेंगे। क्योंकि बाप के उपर हक तो सभी बच्चों का लगता हैं और बापको कुछ न कुछ प्राप्ति करानी भी हैं तो आपको जीवनमुक्ति, उन्हों को मुक्ति, वह मुक्ति में ही खुश हैं और आप जीवनमुक्ति में खुश हैं।

⇨ ईतने विदेश के एक समय आयेंगे, यह संकल्प पुरा हो गया हैं।

**14-3-06**

⇨ साथ-साथ स्व उन्नति का प्लैन बनाना बहुत आवश्यक हैं। बापदादा यही ईशारा देते हैं कि हर वर्ग अपने स्व उन्नति का कोई भी प्लैन बनाओ। ईसलिए समय की समीपता को सामने देखते हुऐ सेवा और स्व उन्नति को कम्बाईन्ड रखो। सिर्फ स्व उन्नति भी नहीं चाहिए, सेवा भी चाहिए लेकिन स्व उन्नति की स्थिति से सेवामें सफलता अधिक होंगी।



सम्मान देना और सम्मान लेना। तो दो अक्षर याद रखना एकता और ईकोनोमी।

⇨ अभी ब्राह्मणों का आपसमें मिलना यह होना चाहिए। तभी आपका वायुमंडल विश्व में स्नेह, सहयोग, हिमंत फैलायेगा। सभी ब्राह्मण जो अपने को ब्रह्माकुमार कुमारी समझते हैं, उनको ऐसे ही सेवा में बिजी रहना हैं।

**30-11-07**

⇨ बापदादा कहते है कि भले लेट तो आये हो लेकिन टूलेट में नहीं आये हो। और नये बच्चों को बापदादा का वरदान है कि लास्ट वाला भी फास्ट पुरुषार्थ कर फर्स्ट डिवीजन में आ सकते है।

⇨ अभी समस्या का नाम, विध्न का नाम, हलचल का नाम, व्यर्थ संकल्प का नाम, व्यर्थ कर्म का नाम, व्यर्थ संबंध का नाम, व्यर्थ स्मृति का नाम समाप्त करो और कराओं।

⇨ जब सभी का मिलकर मनसे दृढ संकल्प का हाथ उठेगा तब ही विश्व के कोने-कोने में सभी का खुशी से हाथ उठेगा - हमारा सुखदाता, शांतिदाता बाप आ गया।

⇨ बाप को प्रत्यक्ष करने का बीडा उठाया है ना! अच्छा डेट फिक्स की है? कितना टाईम चाहिए? बापदादा ने कहां था हर एक अपने पुरुषार्थ की यथा शक्ति प्रमाण अपनी नेचरल चलने की या उडने की विधी समान अपनी डेट संम्पन्न बनने की खुद ही फिक्स करो। बापदादा तो कहेंगा अब करो, लेकिन यथाशक्ति अपने पुरुषार्थ अनुसार अपनी डेट फिक्स करो और समय प्रति समय उसको चेक करो कि समय प्रमाण मन्सा की स्टेज, वाचा की स्टेज, संबंध सम्पर्क की स्टेज में प्रोग्रेस हो रहा है? क्योंकि डेट फिक्स करने से स्वत: ही अटेन्शन जाता है ।

सभी अपने को सदा मैं पूज्य आत्मा हूं, मैं बाप की श्रीमत पर चलने वाली विशेष आत्मा हूं, इस स्मृति को बार बार अपनी स्मृति और स्वरुप में लाना। बापदादा खुश हैं कि जिन्होंने भी किया हैं, उन्होंने अपने मस्तक में विजय का तिलक बाप द्वारा लगा दिया। **अभी समय की समीपता प्रमाण वरदानों को हर समय अनुभव में लाओ। अनुभव की ओथॉरिटी बनो।**

⇨ अच्छा हैं यह सभी बहुत अच्छे फोरेन सेवा के लिए माईक और बच्चें दोनों पार्ट बजायेंगे। बच्चों का भी पार्ट बजायेंगे और माईक और लाइट बनके सेवा में और वृध्धि को प्राप्त करायेंगे। इस ईश्वरीय नोलेज की प्रोपोगन्डा अब विदश में भी निमित्त बनके कर रहे हो। **अभी वहां भी आवाज फैल रहा हैं, अच्छी तरह से फैल रहा हैं और ड्रामानुसार आप सबकी और बाप की प्यारी दादी के निमित्त भी चारों ओर ब्राह्मण परिवार का, बाप का नाम अच्छा प्रत्यक्ष हो गया हैं। दादी ने नाम प्रत्यक्ष किया, नाम और काम दो चीज होती हैं तो दादी ने नाम बहुत अच्छा फैलाया, अभी उन आत्माओं को अपना बनाना यह काम आपका हैं।**

⇨ पहले तो कोई मुश्किल से आता था और अभी खुद कहते हैं हम भी आने चाहते हैं। फर्क हो गया ना। अभी खुद ही कहते हैं कि आपके यहां कार्य बहुत अच्छा सफल होता हैं। **तो अभी आंख खुलने शुरु हो गई हैं। धीरे धीरे आंख खुल जायेंगी।**

⇨ सभी निश्चयबुध्धि और ईश्वरीय नशे में रहने वाले, उडने वाले हैं। **चलने वाले नहीं बनना, उडने वाले। चलने वाले समय पर नहीं पहुंच सकेंगे, उडने वाले बनना। डबल लाईट।**

⇨ अभी एक बात चाहिए सुनायें क्या ? एक बात जैसे सेवामें, कार्य में हर डिपार्टमेन्ट, हर वर्ग, हर सेन्टर, हर जोन सेवा बढा रहा हैं। लेकिन अभी आवश्यकता हैं- एकता और ईकोनोमी की। यह दो चीजें



⇨ बापदादा देख रहे हैं, आपके ही अनेक भाई-बहने, ब्राह्मण नहीं अज्ञानी आत्मायें, अपनी जीवन से हिंमत हार चुकी हैं। अभी उन्हों को हिंमत के पंख लगाने पडेंगे। बिलकुल बेसहारे हो गये हैं, नाउम्मिद हो गये हैं। **तो हे रहमदिल, कृपा दया करनेवाले, विश्व की आत्माओं के ईस्ट देव आत्मायें, अपनी शुभ भावना, रहम की भावना, आत्म भावना द्वारा उन्हों की भावना पूर्ण करो। आपको वायब्रेशन नहीं आता दु:ख, अशांति का। निमित्त आत्मायें हो, पूर्वज हो, पूज्य हो, वृक्ष के तना हो, फाउन्डेशन हो। सब आपको ढुंढ रहे हैं, कहां गये हमारे रक्षक। कहां गये हमारे ईस्ट देव। बाप को तो बहुत पुकारें सुनने आती है। भटकती हुई आत्माओं को ठिकाने की राह बताओ। अटेन्शन प्लीझ, मैं को जलाओ। बाबा, बाबा और बाबा।**

**28-3-06** *(बापदादाने टीचर रुप धारण किया)*

⇨ **अभी समय समीप आना नहीं हैं, आपको लाना हैं।** तो बाप बच्चों से प्रश्न करता हैं, बापसे तो प्रश्न बहुत करते हैं ना तो आज बाप बच्चों से प्रश्न करता हैं -**समय को समीप लानेवाले कौन ? ड्रामा हैं लेकिन निमित्त कौन ?** आपका एक गीत भी हैं, किसके रोके रुका हैं सबेरा। हैं ना गीत ? तो सबेरा लानेवाला कौन ? **विनाशकारी तो तडप रहे हैं कि विनाश करे, विनाश करे... लेकिन नव निर्माण करनेवाले ईतना रेडी हैं ? क्या पुराना खतम हो जाए, नया निर्माण हो नहीं तो क्या होगा ?** *ईसलिए बापदादा ने अभी बाप के बजाय टीचर का रुप धारण किया है। होमवर्क दिया हैं ना ? कौन होमवर्क देता हैं ? टीचर।* **लास्टमें हैं सतगुरु का पार्ट। तो अपने आप से पूछो सम्पन्न और सम्पूर्ण स्टेज कहां तक बनी हैं ?** आप का भी लक्ष्य यही हैं ना कि जल्दी से जल्दी प्रत्यक्षता हो। ईसलिए बापदादा होमवर्क देता हैं। **सतगुरु का पार्ट चलेगा तो समाप्ति हो जायेगी। ईसके लिए सबको तैयार कर रहे हैं। बापदादा को स्वरुप ओफिशियल धारण करना पडता हैं।**

⇨ कई बच्चों को तो देखा कई बच्चें तो मौजीराम हैं, मौज में चल रहे हैं। अभी तो मौज मना लो। सतयुग में कौन देखता हैं, कौन जानता। **तो जमा के खाते में ऐसे मोजीलाल कहो, मौजीराम कहों ऐसे भी बच्चें देखे। तो ऐसे नहीं बनना।** अतिन्द्रिय सुख के मौज के झूले में झूलों। अविनाशी प्राप्तियों के झूलो की मौज में झूलो। **ड्रामा में देखो, माया का पार्ट भी विचित्र हैं। इसी समय ऐसे ऐसे साधन निकले हैं, जो पहले थे ही नहीं।** लेकिन बिना साधन के भी जिन्होंने साधना की, सेवा की वह भी तो एक्झाम्पल सामने हैं ना। यह साधनों की आकर्षण हैं। साधनों को यूझ करना रोंग नहीं कहते हैं। **लेकिन साधना को भूल साधन में लग जाना, इसको बापदादा रोंग कहते हैं।** साधन जीवन के उडती कला का साधन नहीं हैं, आधार नहीं हैं। साधना आधार हैं।

⇨ बापदादा बच्चों से प्रश्न प्रश्न पूंछता हैं - *कब तक हर एक स्वयं को सम्पन्न और सम्पूर्ण बनायेंगे ? दूसरे को नहीं देखो, यह अलबेलापन आ जाता हैं। दूसरे भी करते हैं, मैंने किया तो क्या हुआ ! यह अलबेलापन हैं। मुझे स्व को सम्पन्न बनाना ही हैं।*
*(होमवर्क नही करने की सजा)*

⇨ बापदादा को यह खुशी हैं और दिल की दुआयें दे रहे हैं, अब प्रेक्टिकल करके दिखाना। *फिर बापदादा आयेगा। अभी टीचर बनेगा। ऐसे नहीं आयेगा। नहीं तो फिर ऐसा करेंगे, तो जो जो लिखेंगे एवररेडी उन्हों से बापदादा मिलेंगे औरो से नहीं। चाहे मधुबन में हो, चाहे कहां भी हो, ठीक हैं।* बापदादा सबका सम्पन्न स्वरुप देखेगा। एवररेडी होंगे ? क्योंकि बहुत दु:ख बढ रहा हैं। आप आवाज नहीं सुनते हो ना, बापदादा सुनता हैं। बिलकुल हिम्मतहीन, दिलशिकस्त हो गये हैं।

⇨ अभी धीरे धीरे चलने का समय गया, अभी उडो।



साथ चलेंगे, साथ चलने वाले हो ना। पीछे पीछे नहीं आना, मजा नही आयेंगा। मजा हैं हाथ में हाथ, साथ में साथ, हाथ हैं श्रीमत, श्रीमत बुद्धिमें होंगी, आत्मा परमात्मा का साथ होंगा और घर चलेंगे। चलनेवाले हो ना सभी, रह नहीं जाना। अभी भी साथ हैं, चाहे किसी भी कोने में हो लेकिन बाप साथ हैं, साथ रहेंगे, साथ चलेंगे और फिर ब्रह्मा बाप के साथ राज्य करेंगे। पक्का वायदा हैं ना। बीच में नहीं रह जाना। कोई कस्टम की चीज होंगी तो रुक जायेंगी। रावण की चीज हुई ना कस्टम। कोई भी रावण का संस्कार, स्वभाव वह धर्मराज पुरी कस्टम में फंसा देंगी। और बाप के साथ चले जायेंगे, और कोई अगर होंगा तो कस्टम में रुकना पडेंगा, अच्छा लगेगा, नहीं लगेगा ना ? बाप को भी अच्छा नहीं लगेगा। जब वायदा हैं साथ का, तो सदा साथ रहना।

⇨ दादी जानकी से : बैठो। अभी तो सीट पर सेट हो ना। बापदादाने निमित्त बनाया हैं। इस बच्ची को (गुल्जारदादी को ) भी निमित्त बनाया हैं, दोनों तीनों मिलकर बहुत अच्छी रीति से स्व पुरुषार्थ और विश्व सेवा में और विधि से सिध्धि प्राप्त कराने के निमित्त बनेंगी।

⇨ जो दादीका संकल्प रहा हैं, बाप को प्रत्यक्ष करने का, दादी ने भी बटन तो हाथ में लिया हैं, लेकिन दबायेंगे तो आप ना। आप ही दबायेंगे ना।

**31-10-07** (टीचरका रुप)

⇨ अभी बापदादाने होमवर्क दिया था, याद हैं होमवर्क ? याद हैं ? तो यह दुआ देना, दुआ देना अर्थात दुआ लेना अन्डरस्टुड हो जाता हैं। तो जिन्होंने भी किया हैं उन सबको, चाहे आये हैं, चाहे नहीं आये हैं लेकिन बापदादा के सामने हैं। तो उन्हों को बापदादा मुबारक दे रहे हैं। किया हैं और अपनी नेचरल नेचर बनाते हुए आगे भी करते, कराते रहना। और जिन्होंने थोडा बहुत किया भी हैं, नहीं भी किया हैं तो वह

## बापदादा के गंभीर ईशारे -समय की समीपता
## 31-10-06 से 31-3-07

**31-10-2006**

⇨ वर्तमान समय ईन खजानों के मैजोरिटी आप सबके आत्मिक भाई और बहनें प्यासी हैं। तो क्या अपने भाई-बहेनों के उपर तरस नहीं पडता। क्या प्यासी आत्माओं की प्यास नहीं बुझायेंगे? कानों में आवाज नहीं आता - हे हमारे देव देवियां हमें शकित दो, सच्चा प्यार दो। आपके भक्त और दु:खी आत्मायें दोनों ही दया करो, कृपा करो, हे कृपा के देव और देवियां कहकर चिल्ला रहे हैं। समय की पुकार सुनाई देती हैं ना ! और समय भी देने का अब हैं। फिर कब देंगे? उस समय सिर्फ अंचली दे सकेंगे।

⇨ क्या अभी तक अपनी छोटी छोटी समस्याओं में पुरुषार्थी रहेंगे ! अब पुरुषार्थ करो अखंड महादानी, अखंड सहयोगी। ब्राह्मणों में सहयोगी बनो ओर दु:खी आत्मायें, प्यासी आत्माओं के लिये महादानी बनो। अब ईस पुरुषार्थ की आवश्यकता हैं। अभी कुछ चेंज भी करना चाहिए ना, वही स्व प्रति पुरुषार्थ बहुत टाईम किया।

⇨ अब से संकल्प करो - मेरा समय, संकल्प विश्व प्रति, विश्व की सेवा प्रति। ईसमें स्व का ओटोमेटिक हो ही जायेगा, रहेगा नहीं, बढेगा।

⇨ आप तो टूलेट से पहले आ गये हो, चाहे अभी नये भी आये हैं लेकिन टूलेट का बोर्ड नहीं लगा हैं। लेट का लगा हैं, टूलेट का नहीं लगा हैं।

⇨ तो नया भी कोई मेकअप कर सकता हैं। गोल्डन चान्स हैं। लेकिन जल्दी में जल्दी टूलेट का बोर्ड लगना हैं, ईसलिए पहले ही कर लो।

⇨ क्योंकि समय के महत्व को भी जानते हो, अचानक होना हैं। कई भाई-बहनें सोचते हैं थोडा सा ईशारा मिल जाये ना, 10 साल हैं, 20 साल हैं, कितना हैं, लेकिन बापदादा ने कह दिया हैं, अचानक होना हैं। एवररेडी रहना है। फास्ट गति करो अभी - स्वयं की भी, औरों को



⇨ बापदादा अभी समय की समीपता प्रमाण हर एक बच्चें में क्या देखने चाहते हैं ? जो कहते हैं वह करके दिखाना हैं। जो सोचते हो वह स्वरुप में लाना हैं क्योंकि बाप का वर्सा हैं, जन्म सिध्ध अधिकार हैं मुक्ति और जीवनमुक्ति। तो अब संगम पर ही मुक्ति और जीवनमुक्ति के संस्कार ईमर्ज चाहिए ना ! तो चेक करो सर्व बंधनो से मन और बुध्धि मुक्त हुए हैं ? अगर किसी भी प्रकार का चाहे देह का, चाहे कोई देह के संबंध, माता-पिता बंधु सखा नहीं, देह के साथ जो कर्मेन्द्रियों का संबंध हैं, उस कोई भी कर्मेन्द्रियो के संबंध का बंधन हैं, आदत का बंधन हैं, स्वभाव का बंधन है, पुराने संस्कार का बंधन हैं, तो बाप समान कैसे हुए ?

⇨ अभी 6 मास बापदादा देते हैं क्योंकि अभी सीजन तो शुरु होनी ही हैं, तो 6 मास ज्यादा टाईम दे रहे हैं। जैसे सेवा उमंग उत्साह से कर रहे हैं, ऐसे स्वयं को भी स्व के प्रति सेवा स्व सेवा और विश्व सेवा, स्व सेवा अर्थात चेक करना और अपने को बाप समान बनाना। तो 6 मास अभी स्व सेवा के प्रति खास समय दे रहे हैं। बापदादा ने कितने समय से दो शब्द बार-बार रिवाईज करायें हैं, वह दो शब्द कौन से हैं ? अचानक और एवररेडी।

⇨ तो दादी कहते हो, याद आती हैं ना, आनी ही चाहिए क्योंकि नंबर वन थी ना। तो वन नंबरने विन तो किया ना लेकिन जब भी दादी की याद आवे तो सिर्फ चित्र नहीं देखना लेकिन यह याद करो कि मैं भी एवररेडी हूं। मुझे भी अचानक का पाठ याद हैं ? अभी अभी मैं भी अचानक चली जाउं, तो नष्टोमोहा, प्रकृतिजीत हूं ? यही दादी की सौगात सब अपने पास रखो।

⇨ अच्छा हैं यह परमात्म प्यार बहुत पुरुषार्थमें सहयोग देता हैं। तो हर एक बच्चा प्यारा हैं, प्यारे रहेंगे और प्यार के झूलेमें झूलते हुए बापदादा के साथ अपने घर चलेंगे। वह भी टाईम आ जायेंगा जो सब

भी योग्य बनाने की।

- ⇨ बाकी समय का ब्युगल तो अचानक बजना हैं, उसके पहले अपने भाई-बहेनों का कल्याण तो करना हैं ना। तरस आता हैं ना? अब छोटी छोटी बातो में टाईम नहीं लगाओ।
- ⇨ अभी प्रेक्टिस चाहिए सेकन्ड की क्योंकि आगे जो फाईनल समय आनेवाला हैं, जिसमें पास विद ओनर का सटीफिकेट मिलना हैं, उसका अभ्यास अभी से करना हैं। सेकन्ड में जहां चाहे, जो स्थिति चाहिए उस स्थिति में स्थित हो जाए। तो एवररेडी। रेडी हो गए ।
- ⇨ ऐसे सारे दिन में सेकन्ड में स्थित हो सकते हैं! ईसका अनुभव करते रहो क्योंकि अचानक कुछ भी होना हैं। ज्यादा समय नहीं मिलेगा। हलचल में सेकन्ड में अचल बन सके इसका अभ्यास स्वयं ही अपना समय निकाल बीच-बीच में करते रहो। ईससे मनका कंट्रोल सहज हो जायेगा। कंट्रोलिंग पावर, रुलिंग पावर बढती जायेगी।
- ⇨ अभी उडने का ही समय हैं क्योंकि अचानक कुछ भी हो सकता हैं, हलचल का समय हैं। उसमें आप अचल। यही सब को वायब्रेशन आवे कि हम हलचल में हैं, यह अचल हैं। होना ही हैं।

**16-11-06**

- ⇨ कितना समय बित गया। 70 वा साल मना रहे हो ना!
- ⇨ तो समय का भी महत्व अटेन्शन में रखो। समय पूछ के नहीं आना हैं। कई बच्चें अभी भी कहते हैं, सोचते हैं, कि थोडा सा अंदाज मालूम होना चाहिए। चलो 20 साल हैं, 10 साल हैं, थोडा मालूम हो। लेकिन बापदादा कहते हैं समय का फाईनल विनाश का छोडो, आपको अपने शरीर के विनाश का पता हैं? कोई हैं जिसको पता हैं कि मैं फलाने तारीख में शरीर छोडुंगा, हैं पता? और आजकल तो ब्राह्मणों के जाने का भोग बहुत लगाते हो। कोई भरोसा नहीं। ईसलिए समय का महत्व जानो। यह छोटा सा युग हैं आयु में छोटा, लेकिन बडे ते



- ⇨ अब यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय छिपा हुआ नहीं रहेगा, एक-एक एक्टिविटी तरफ खुल्ली नजर हो गई हैं, उलटे वाले उल्टा देखेंगे, सुल्टे वाले सुल्टा देखेंगे, लेकिन विशेष नजर पडी गई तो उसी अनुसार आप सबको मिलकर सभी स्थानों के वायुमण्डल को पावरफुल बनाना होगा, क्योंकि दादीने विश्व की नजर में लाया हैं। एक -पहले जो प्रेसीडेन्ट बननी थी उसके कारण सबकी नजर में आया और फिर दादी के कारण ज्यादा नजर में आया तो सबकी नजर अभी विशेष ईस विद्यालय की तरफ हैं। ईसलिए अन्डरलाईन।
- ⇨ ऐसे आप निमित्त हो, तो निमित्त को दादी को फोलो करना बहुत जरुरी हैं। शक्ति तो सभी में नहीं हैं ना, नंबरवार हैं ना, सहयोग दो, शक्ति दो, रहम करो, आत्मिक प्यार दो क्योंकि सबकी नजर अभी देश-विदेश की निमित आत्माओं पर हैं क्योंकि यह मीडिया ने चारों ओर स्पष्ट कर लिया हैं, अभी सबकी नजर हैं। क्या हो रहा हैं, क्या हो रहा हैं, और ही ज्यादा सोचेंगे। क्या हैं, कैसा हैं, ईसलिए किल्ले को मजबुत करना। सभी को समझना चाहिए मैं निमित्त हूं, वायुमण्डल को पावरफुल बनाने के लिए मैं निमित हुं, दूसरे नहीं, दूसरे तो नंबरवार हैं आप तो निमित हो।
- ⇨ तो दादी ने कहां मैं बाबा के राज को समझ गइ हूं ईसलिए मैं खुशी से जा रही हुं।

**15-10-07**

"6 मास अभी स्व सेवा के प्रति खास समय दे रहे हैं"

- ⇨ तो बापने भी अपना बना लिया। इसी खुशी में पलते हुए उड रहे हो ना! उड रहे हो, चल नहीं रहे हो, उड रहे हो क्योंकि चलने वाले बाप के साथ अपने घर में जा नहीं सकेंगे। क्योंकि बाप तो उडने वाले हैं, तो चलने वाले कैसे साथ पहुंचेंगे।

विशेष पार्टधारी साथी एवरेडी हैं? अब यह नहीं समजो कि हम सेन्टर निवासी, मधुबन निवासी, हद के सेवाधारी हैं, नहीं, लेकिन विश्व की स्टेज के विशेष पार्टधारी हैं। सारे विश्व की नजर अब दादी की प्रत्यक्षता के साथ आप सबके तरफ हैं। विश्व की नजर जो भी ब्रह्माकुमार-कुमारी कहलाते हैं, छोटा हैं, बडा हैं, किसी भी कार्य के अर्थ निमित्त हैं, चाहे छोटे कार्य के भी निमित्त हैं लेकिन एक-एक के उपर, विश्व के आत्माओं की नजर आपके उपर हैं।

⇨ दादी कहती हैं कल की बातें छोडो, आज भी नहीं, अब... प्रत्यक्षता का झंडा उंचा करने वाले उंची स्थिति का अपना संम्पन्न स्वरुप दिखाओं। उसके लिए कुछ भी परिवर्तन करना पडे, सहन करना पडे, रहम की भावना रखनी पडे, निर्मल वाणी बनानी पडे, शुभ भावना, शुभ कामना की नेचुरल नेचर बनानी पडे, तो दादी ने कहां आप पूंछना मेरी ईस बात को, मेरे समान बनने के लिए तैयार हैं? दादीने ईतनों को चलाके दिखाया, कितने वर्ष, एक दो वर्ष नहीं, चाहे बडे चाहे छोटे, चाहे कर्मणा वाले, चाहे भाषण वाले, चाहे जोन वाले, चाहे दादियां, दादाओं को भी। निर्मोही बन गई ना, लास्ट में किसी को याद किया?

⇨ किसके मन की स्थिति भी रीयल क्या हैं, वह भी सभी का चक्कर लगाके नोट किया हैं। कहती थी कि मैं आकर सुनाउंगी। कितना भी कोई छिपावे ना, वतन में छिप नहीं सकता। वहां का यंत्र रुहानी यंत्र हैं।

⇨ वह दिन अब समीप लाना हैं, समय आने पर नहीं, समय को आपको समीप लाना हैं। तो ऐसे स्व परिवर्तक, दृढ संकल्पधारी बच्चा बनना हैं।

⇨ तीन शब्द दादी के सदा याद करना-निमित्त, निर्मान और निर्मल वाणी। हर कार्य शुरु करने के पहले यह याद करना फिर कार्य शुरु करना। तो बहुत जल्दी दादी के समान, सहज समान बन जायेंगे।



बडी प्राप्ति का युग हैं क्योंकि बडे ते बडा बाप ईस छोटे से युग में ही आता हैं और बडे युगो में नहीं आता हैं। यही छोटा सा युग हैं जिसमें सारे कल्प की प्राप्ति का बीज डालने का समय हैं।

⇨ समय का महत्व हैं। अलबेला नहीं बनना। 70 साल बित चुके हैं, अभी अगर अलबेले बने तो बहुत कुछ अपनी प्राप्ति कम कर देंगे। क्योंकि जितना आगे बढते हैं ना उतना एक अलबेलापन, बहुत अच्छे हैं, बहुत अच्छे चल जायेंगे, पहुंच जायेंगे, देखना पीछे नहीं रहेंगे, हो जायेगा, यह अलबेलापन और रोयल आलस्य। अलबेलापन और आलस्य। कब शब्द हैं आलस्य, अब शब्द हैं तुरंत दान महापुण्य।

⇨ बापदादा अटेन्शन खिंचवा रहा हैं। ईस सीजन में न स्वमान से उतरना हैं, न समय के महत्व को भूलना हैं। अलर्ट, होशियार, खबरदार।

⇨ क्योंकि बापदादा समझते हैं जिसने मेरा बाबा कहां, वह साथमें चले। बराती होके नहीं चले। बापदादा के साथ श्रीमत का हाथ पकडकर साथ चले और फिर ब्रह्मा बाप के साथ पहले राज्य में आवे। मजा तो पहले नयें घर में होता हैं ना। एक मास के बाद भी कहते, एक मास पुराना हैं। नया घर, नई दुनिया, नई चाल, नया रसम रिवाज और ब्रह्मा बाप के साथ राज्य में आये। सभी कहते हैं ना, ब्रह्मा बाप से हमारा बहुत प्यार हैं। तो प्यार की निशानी क्या होती हैं? साथ रहे, साथ चले, साथ आये। यह हैं प्यार का सबूत। पसंद हैं? साथ रहना, साथ चलना, साथ आना, पसंद हैं? हैं पसंद? तो जो चीज पसंद होती हैं उसको छोडा थोडे ही जाता हैं! तो बाप की हर बच्चें के साथ प्रित की रीत यही हैं कि साथ चले, पीछे पीछे नहीं। अगर कुछ रह जायेगा तो धर्मराज की सजा के लिए रुकना पडेगा। हाथमें हाथ नहीं होगा, पीछे पीछे आयेंगे। मजा किसमें हैं? साथ में हैं ना! तो पक्का वायदा हैं ना? पक्का वायदा हैं साथ चलना हैं या पीछे पीछे आना हैं? बापदादा यही चाहते हैं एक भी बच्चा पीछे नहीं रहे, सब साथ साथ

चलें। एवरेडी रहना पडेगा।

- ⇨ अभी सभी द्रढ संकल्प करेंगे। द्रढ संकल्प की स्थिति में स्थित होकर बैठो, करना ही हैं, चलना ही हैं। साथ चलना हैं।
- ⇨ कयोंकि अभी समय के अनुसार एक ही समय डबल सेवा चाहिए। विश्व की भी और स्वयं की भी। सारे वर्ल्डमें सुख शांति की किरणें देना हैं।
- ⇨ अभी थोडी फास्ट गति करो, फास्ट गति से आत्मायें निकले, कमसे कम इतना तो कहे कि हमारा बाबा आ गया। बाबा शब्द तो बोले दिलसे। मुख से नहीं, दिल से।
- ⇨ बापदादा यही देखना चाहते हैं कि ईतनी करोड आत्माओं को कमसे कम यह संदेश तो मिले। अभी काफी रहे हुए हैं, जैसे आफ्रीका ने किया, बापदादा ने सुना कि युरोप में भी कोई देश नहीं रहा हैं ना। युरोप और आफ्रिका दोनों तरफ कोई विशेष देश नहीं रहे हैं, ऐसे सब तरफ होना चाहिए। संदेश तो पहुंचे ना। नहीं तो उल्हने बहुत मिलेंगे आपको। सब उल्हना देंगे हमारा बाप आया और आपने हमको सुनाया भी नहीं। उल्हना नहीं रह जाए।

**30-11-06**

- ⇨ अभी तो समय की पुकार, भक्तों की पुकार, अपने मन की आवाज क्या आ रही हैं? अभी अभी संम्पन्न और समान बनना ही हैं। वा यह सोचते हैं बनेंगे, सोचेंगे, करेंगे...! अब समय के अनुसार हर समय एवरेडी का पाठ पक्का रहना ही हैं।
- ⇨ जैसे स्नेह की सब्जेक्ट में पास हैं, अब यह कमाल करो समान बनने की सब्जेक्ट में भी पास विद ओनर बनके दिखाओ। पसंद हैं? समान बनना पसंद हैं? पसंद हैं लेकिन बनने में थोडा मुश्किल हैं! समान बन जाओ तो समाप्ति सामने आयेंगी।



## बापदादा के गंभीर ईशारे - समय की समीपता
## 6-09-07 से 15-12-07 (अव्यक्त बापदादा)

**6-09-07** (दादी जी की पधरामणी - 7.30 बजे शाम को दादी गुल्जारजी के तनमें)

- ⇨ दादी जी बोली... सदा एक दो को सम्मान देते हुए श्रेष्ठ स्वमान में रहते स्वयं को और विश्व की आत्माओं को मुक्ति जीवनमुक्ति का वर्सा दिलाते रहना। सर्व से स्नेही बनने का रुप प्रत्यक्ष करना। दुनिया में भी प्यार चाहिए, सच्चा प्यार। तो प्यारे रहना और सर्व को आत्मिक प्यार की अंचली देते रहना, यही हमारी याद हैं। अच्छा ।

**6-9-07**

- ⇨ *दादी की प्रत्यक्षता द्वारा ईश्वरीय विश्व विद्यालय और बापदादा की प्रत्यक्षता का फस्ट चैप्टर, छोटा सा चैप्टर आरंभ हुआ हैं।* यह कौन हैं, यह आध्यात्मिक विद्यालय क्या हैं, सबकी दृष्टि में, मन में, दिल में क्वेश्चन मार्क के रुप में उत्पन्न हुआ हैं। पहले क्या हैं, क्या हैं... यह क्वेश्चन होता, फिर यह हैं, यह हैं का उत्तर सामने आयेगा।
- ⇨ अब आप सबको प्यार का स्वरुप प्रत्यक्ष रुप में दिखाकर ईस प्रत्यक्षता के झंडे को उंचा लहराना हैं। दादी नें प्रत्यक्षता के झंडे का, प्रत्यक्षता के पर्दे का स्वीच ओन करने के लिए बटन हाथ में पकडा हैं, तो आप सब साथी हो ना। बहुत प्यार हैं ना दादी से, तो जैसे दादी स्व ईच्छा से एवरेडी, नष्टोमोहा बन गई। अचानक के पार्ट में पास हो गई। यह अन्तिम पाठ का आप स्नेही, प्रेमी आत्माओं को भी ईशारा देकर गई। अब आप अपने लिए सोचो, जो दादीने प्रत्यक्षता का पर्दा खोलने का बटन हाथमें उठाया हैं, उस पार्ट में हमें कैसे सहयोगी बनना हैं। बटन खोलने में देरी नहीं लगेगी लेकिन प्रत्यक्षता के झंडे को उंचा लहराने वाले को प्रत्यक्षता का पर्दा खोलने के पहले

देना।

- तो आप भी ऐसा आपस में प्लैन बनाओ, कोई ऐरिया रह नहीं जाये, कम से कम संदेश तो मिल जाये, **नहीं तो आपको बहुत उल्हने मिलेंगे। हमारा बाबा आया, और हमें सूचना नहीं दी।** खुशी होती हैं, अपने मन में सेटिसफेक्शन होता हैं हमनें अपनी सेवा का कार्य संदेश देने का तो पूरा किया। क्योंकि बापदादा को भी कोई बच्चें का उल्हना अच्छा नहीं लगता।
- अभी पक्का। **कुछ भी हो जाये, दूसरे को नहीं देखना,** अपने को **देखना,** मुझे करना हैं, मुझे बदलना हैं। **दूसरा बदले तो मैं बदलु नहीं।** ऐसे करेंगे?
- अपने को प्रत्यक्ष करेंगे तो बाप की प्रत्यक्षता भी बहुत सहज और जल्दी होगी। **मीटिंग में जिसका भी नाम रखा हैं वह जिम्मेवार हैं,** सिर्फ सुनने वा सुनाने के लिए नहीं लेकिन जिम्मेवार हैं **बैलेन्स रखने** और **रखाने के।**
- **बस दिलसे याद करो, कोई भी छोटी मोटी बात आवे, मेरा बाबा, बस। बाबा आप ले लो। तो प्रोबलेम बाबा के पास पहुंच जायेंगी, आप हल्के हो जायेंगे। बाप के साथ चलना हैं ना, पीछे पीछे तो नहीं आना हैं, साथ साथ चलना हैं तो उडना पडेंगा। बाप उडेंगे और बच्चें हल्के नहीं होंगे तो उडेंगे कैसे। साथ तो चल नहीं सकेंगे। ईसलिए डबल लाईट। कोई भी प्रकार का बोझ नहीं। जो बोझ हो बाप को दे दो। खुद हल्के रहो। देना तो आता हैं ना। प्रोबलेम नहीं देखो, डबल लाईट बनके आगे बढते रहो - ईसके -दादी जानकी के डायरेक्शन से चलो।**



*(संगमयुग की समाप्ति - क्यों?)*

- यह पूंछ दिखाया हैं मैं पन का। **जब तक महावीर ईस पूंछ को नहीं जलायेंगे तो लंका अर्थात पुरानी दुनिया भी समाप्त नहीं होगी। तो अभी ईस मैं मैं की पूंछ को जलाओ तब समाप्ति समीप आयेगी।** जलाने के लिए ज्वालामुखी तपस्या, साधारण याद नहीं, ज्वालामुखी याद की आवश्यकता हैं। ईसीलिए ज्वालादेवी की भी यादगार हैं। शक्तिशाली याद। तो सुना क्या करना हैं? *अब यह मनमें धुन लगी हुई हो - समान बनना ही हैं, समाप्ति को समीप लाना ही हैं। आप कहेंगे संगमयुग तो बहुत अच्छा हैं ना तो समाप्ति क्यों हो?* लेकिन आप **बाप समान दयालु, कृपालु, रहमदिल आत्मायें हो, तो आज की दु:खी आत्मायें और भक्त आत्माओं के उपर हे रहमदिल आत्मायें रहम करो। मसिर्फुल बनो। दु:ख बढता जा रहा हैं, दु:खियों पर रहम कर उन्हों को मुक्तिधाम में तो भेंजो।** सिर्फ वाणी की सेवा नहीं लेकिन अभी आवश्यकता हैं मन्सा और वाणी की सेवा साथ साथ हो। एक ही समय पर दोनों सेवा साथ हो। सिर्फ चान्स मिले सेवा का, यह नहीं सोचो, चलते फिरते अपने चहेरे और चलन द्वारा बाप का परिचय देते हुए चलो। आप का चहेरा बाप का परिचय दे। **आप की चलन बाप को प्रत्यक्ष करती चले।**
- पक्के हैं, पक्के रहेंगे, पक्के होके साथ चलेंगे।
- **अभी तो सारा भारत आपके हाथ में आना हैं।** खुद ही ओफर करेंगे आओ, अभी आपको थोडी मेहनत करनी पडती हैं, पर्चे आदि छपाने पडते हैं, मेहनत करनी पडती हैं। **अभी आपे ही सब ओफर करेंगे। बस अभी यह सीन रही हुई हैं कि सबके मुख से एक ही आवाज निकले हमारा बाबा आ गया। यह भी समीप आ रहा हैं,** सिर्फ आप उडते रहो, **फरिश्ते बनकर के उडते रहो** तो उन्हों को फरिश्तों का साक्षात्कार होगा।

**15-12-06**

➪ आज की दुनियामें **मैजोरिटी आत्मायें** देखने और सुनने से थक गये हैं लेकिन **अनुभव द्वारा प्राप्ति करना चाहते है।**

➪ लेकिन स्वयं में परिवर्तन करने की शक्ति और **वर्तमान समय के महत्व** को जानते हुऐ परिवर्तन करने में समय लगाना नहीं चाहिए। **सेकन्ड में परिवर्तन की शक्ति।** अभी तीव्र गति का समय हैं, **तीव्र पुरुषार्थ का समय हैं, साधारण पुरुषार्थ का समय नहीं हैं,** सेकन्ड में परिवर्तन का अर्थ हैं - स्मृति स्वरुप द्वारा एक सेकन्ड में निर्विकल्प, व्यर्थ संकल्प निवृत्त हो जाये, क्यों? **समय को, समाप्ति को समीप लाने वाले निमित्त हो।** जैसे सायन्सवाले सब बातोमें तीव्र गति कर रहे हैं, और परिवर्तन की शक्ति भी ज्यादा कार्य में लगा रहे हैं तो सायलेन्स की शक्तिवाले अभी लक्ष्य रखो अगर परिवर्तन करना हैं, **नोलेजफुल हो तो अभी पावरफुल बनो, सेकन्ड की गति से। कर रहे हैं, हो जायेंगे... कर लेंगे... नहीं।** हो सकता हैं या मुश्किल हैं? **क्योंकि लास्ट समय सेकन्ड का पेपर आना हैं,** मिनीट का नहीं, तो सेकन्ड का अभ्यास बहुतकाल का होगा तब तो सेकन्ड में पास विद ओनर बनेंगे ना।

➪ अभी बापदादा ईशारा दे रहे हैं कि परिवर्तन की मशीनरी तीव्र करो। नहीं तो पास विद ओनर होने में मुश्किल हो जायेगा। **बहुतकाल** का अभ्यास चाहिए। सोचा और किया। **सिर्फ सोचना स्वरुप नहीं बनो, समर्थ स्मृति सो समर्थ स्वरुप बनो।** व्यर्थ को तीव्र गति से समाप्त करो। **व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ बोल, व्यर्थ कर्म, व्यर्थ समय और संबंध संम्पर्क में भी व्यर्थ विधि, रीति सब समाप्त करो।** जब ब्राह्मण आत्मायें तीव्र गति से यह स्व के व्यर्थ की समाप्ति करेंगे तब आत्माओं की दुआयें और अपने पुण्य का खाता तीव्र गति से जमा करेंगे।

➪ ईसलिए बापदादा आज यही स्लोगन याद दिला रहे हैं कि **अब तीव्र बनो, तीव्र पुरुषार्थी बनो। तीव्र गति से समाप्ति वाले बनो। तीव्र गति**



**दे रहे हैं कि अभी समय की रफतार तीव्रगति में जा रही हैं इसलिए सभी बच्चों को अभी सिर्फ पुरुषार्थी नहीं बनना हैं लेकिन तीव्र पुरुषार्थी बन, पुरुषार्थ की प्रालब्ध का अभी बहुतकाल से अनुभव करना हैं।** तीव्र पुरुषार्थ की निशानीयां बापदादा ने पहले भी सुनाई हैं। तीव्र पुरुषार्थी सदा मास्टर दाता होगा, लेवता नहीं देवता, देने वाला। यह हो तो मेरा पुरुषार्थ हो, यह करे तो मैं भी करु, यह बदले तो मैं भी बदलु, यह बदले, यह करे, यह दातापन की निशानी नहीं हैं। **कोई करे न करे, लेकिन मैं बापदादा समान करुं, ब्रह्मा बाप समान भी, साकार में भी देखा, बच्चें करे तो मैं करु, कभी नहीं कहां, मैं करके बच्चों से कराउं।** दुसरी निशानी हैं तीव्र पुरुषार्थी की **सदा निर्मान,** कार्य करते भी निर्मान, निर्माण और निर्मान दोनों का बैलेन्स चाहिए।

➪ सेफ्टी का साधन हैं बापदादा की छत्रछाया में रहना। बापदादा के कम्बाईन्ड रहना। छत्रछाया हैं श्रीमत।

➪ **बापदादा ईशारा दे रहे हैं कि स्व प्रति हर एक को संकल्प, बोल, संपर्क, संबंध, कर्म में नवीनता लाने का प्लैन बनाना ही हैं। बापदादा पहले रिजल्ट देखेंगे क्या नवीनता लाया? क्या पुराना संस्कार द्रढ संकल्प से परिवर्तन किया? यह रिजल्ट पहले देखेंगे।** क्या सोचते हो? ऐसा करे? करे? हाथ उठाओ जो कहते हैं करेंगे, करेंगे? अच्छा। **करेंगे या दूसरो को देखेंगे?** क्या करेंगे? **दूसरो को नहीं देखना, बापदादा को देखना, अपनी बडी दादी को देखना।**

➪ **तो अगली सीजन में सभी की सूरत में बाप की सूरत दिखाई दे।** हर एक के संबंध संम्पर्क में बाप जैसे संस्कार दिखाई दे। यह हैं स्नेह का रिटर्न, स्वयं को टर्न करना।

➪ आगे के लिए स्व परिवर्तन के लिए, **अपने को देखना हैं, अपने को बदलना हैं,** अगर झुकना पडे तो झुकना हैं लेकिन **परिवर्तन करने से स्व को हटाना नहीं हैं।** ऐसे द्रढ संकल्प कर हर एक को सबूत देना हैं क्योंकि सभी सपूत बच्चें हो। सपूत बच्चें का काम ही हैं प्रत्यक्ष सबूत

⇨ तो क्या करेंगे? दादी सुनाओ क्या करेंगे? करके दिखायेंगे। **करके ही दिखाना हैं। पहले अपने को प्रत्यक्ष करो तब बाप प्रत्यक्ष होंगा।** क्योंकि आप द्वारा होना हैं ना ! तो बाप कहते हैं आप कब अपने को प्रत्यक्ष करेंगे? आपसे तो बाप प्रत्यक्ष हो ही जायेंगा।

⇨ बापदादाने सुना कि मैजोरिटी सभी तरफ अभी एक-दो का उमंग लग रहा हैं कि हर एक अपने एरिया को चेक करके संदेश देने का प्रोग्राम बना रहे हैं। भिन्न-भिन्न विधि से कर रहे हैं लेकिन जो भी कर रहे हो वह अच्छा कर रहे हो। **उल्हना उतार रहे हो अपना।** यह उमंग उत्साह स्वयं को भी उडाता हैं, और औरो में खुशी की लहर फैलाता हैं। दु:खी आत्माओं को जैसे कोई डूबे हुऐ को पत्ते का भी सहारा मिल जाता हैं, तिनके का सहारा मिल जाता हैं ना, **ऐसे दु:खी आत्माओं को सहारा मिल जाता हैं। उनके मन से जो दुआयें निकलती हैं वह आपके पुन्यके खाते में जमा हो जाती हैं।** यह गुह्य हिसाब हैं। जितनों को जो प्राप्ति होती हैं, आपके खाते में वो प्राप्ति जमा हो जाती है।

⇨ स्व की सेवा में क्या सुनाया? **तीव्र पुरुषार्थी,** पुरुषार्थी सभी हैं **लेकिन तीव्र पुरुषार्थी बनना हैं, जो सोचा वह किया, बापने कहा बच्चोंने किया। यही आपके जगतअम्बा की युक्ति थी, नंबरवन हो गई।** चेक करो रात को, चलते फिरते भी जो बापने कहां करना हैं, चलना हैं, सोचना हैं वह किया? **जो बापने कहा वो करना ही हैं।**

**31-3-07**

⇨ बापदादाने पहले से ही इशारा दे दिया हैं कि **बहुतकाल** का अभी का अभ्यास **बहुतकाल** की प्राप्ति का आधार हैं। **अंत में हो जायेगा नहीं सोचना,** हो जायेगा नहीं, होना ही हैं। क्यों? स्वराज्य का जो अधिकार हैं वह अभी **बुहतकाल** का अभ्यास चाहिए। अगर एक जन्म में अधिकारी नही बन सकते, अधिन बन जाते हो तो अनेक जन्म कैसे होंगे ! **इसलिए बापदादा सभी चारों ओर के बच्चों को बारबार इशारा**



**से मनसा द्वारा वायुमण्डल परिवर्तन वाले बनो।**

⇨ मन में तो सभी जानते हैं, क्या करना हैं, क्या नहीं करना हैं, बापदादा क्या चाहते हैं, समझते तो सभी हैं, अभी सिर्फ करना हैं। **नोलेजफुल हो लेकिन अभी पावरफुल बनना।**

⇨ **अभी जल्दी करना हैं, बस।** कभी कभी थोडा ढीला पड जाते हैं। **अभी ढीले पडने का समय नहीं हैं। बातें तो भिन्न-भिन्न होती हैं लेकिन हमें बातो का राज समज राजयुक्त, योगयुक्त, स्नेहयुक्त, सहयोगयुक्त बन चलना हैं।**

**31-12-06**

⇨ बाप भी यही चाहते हैं कि इस नये वर्ष में **70** वर्ष पुरे हो रहे हैं अब **71** वर्ष में कोई कमाल करके दिखाओ। लेकिन **किस लिये सेवा करते हो? तो क्या जवाब देते हैं? बाप को प्रत्यक्ष करने के लिए।** तो बाप आज बच्चों से प्रश्न पूछते हैं, बाप को प्रत्यक्ष तो करना ही हैं, करेंगे ही। **लेकिन बाप को प्रत्यक्ष करने के पहले स्व को प्रत्यक्ष करो। करना ही हैं, करना पडेगा।**

*(बाबा परिवर्तन चाहते हैं - मुक्ति धाम का गेट खोलो)*

⇨ सिर्फ अपने को नहीं बनाना, साथियों को भी बनाना **क्योंकि बापदादाने देखा कि बच्चों के परिवर्तन बिना विश्व का परिवर्तन भी ढीला हो रहा हैं!** और आत्मायें नये नये प्रकार के दु:ख के पात्र बन रही हैं। दु:ख अशांति के नये नये कारण बन रहे हैं। *तो बाप अभी बच्चों के दु:ख की पुकार सुनते हुए परिवर्तन चाहते हैं।* तो हे मास्टर सुखदाता बच्चें, दुखियों पर रहम करो। **भक्त भी भक्ति करकर के थक गयें हैं। भक्तों को भी मुक्ति का वर्सा दिलाओ।** रहम आता हैं कि नहीं? अपनी ही सेवामें, अपनी ही दिनचर्या में बिजी हैं? निमित्त हो, ऐसे नहीं बडे निमित्त हैं, एक एक बच्चा जिसने मेरा बाबा कहां हैं, माना हैं वह सब निमित्त हैं। तो नये वर्ष में एक दो को गिफ्ट भी देते हैं ना। **तो आप भक्तों की आश पुरी करो उसको गिफ्ट दिलाओ। दुखियों को दु:ख**

से छुडाओ, मुक्तिधाम में शांति दिलाओ - यह गिफट दो। ब्राह्मण परिवार में हर आत्मा को दिल के स्नेह और सहयोग की गिफट दो।

⇨ बस सिर्फ ओ.के.। बाप भी ओ.के. वालों को गुप्त में बहुत स्नेह की दुआओं की वर्षा करते हैं। वाह! बच्चें वाह! का गीत गाते हैं। चाहे भारतवाले, चाहे विदेशवाले लेकिन कोई कोई बच्चें गुप्त रीति से तीव्र पुरुषार्थ कर रहे हैं और बापदादा के पास लिस्ट भी हैं, भारत में भी हैं, विदेश में भी हैं लेकिन बापदादा अभी बहुतकाल देखने चाहता हैं, कर रहे हैं लेकिन बहुतकाल चाहिए। तो बहुतकाल बापदादा नोट कर रहे हैं, कि बहुतकाल के तीव्र पुरुषार्थी कौन कौन हैं। बीच बीच में अगर ढीले हो जाते हैं तो बहुत काल तो कट हो जाता हैं ना। ईसलिए बापदादा लिस्ट निकाल रहा हैं, अभी थोडे हैं। बनना तो सबको हैं। भारतवालों को भी बनना हैं, विदेशवालों को भी बनना हैं, लेकिन कोई कोई गुप्त अच्छे हैं। बापदादा गिनती करते रहते हैं, कितने बच्चें हैं ऐसे। अभी बहुतकाल पर अटेन्शन रखो। कयोंकि बहुतकाल के विजयी बहुतकाल का फुल आधा कल्प के राज्य भाग्य के अधिकारी बनेंगे। अभी टेन्शन खतम, अटेन्शन। ऐसी लिस्ट में आ जाओ, बहुतकाल के तीव्र पुरुषार्थी।

⇨ जो भी आपको देखे कहें यह तो फरिश्ता हैं। फरिश्ता फरिश्ता दिखाई दो। फरिश्ते की चाल उडती कला। नीचे उपर नहीं। उडनेवाले और उडानेवाले। कमजोर को भी उडानेवाले। नीचे आनेवाले नहीं।

⇨ ऐसे आप भी इस वर्ष किसी से भी न दिलशिकस्त होना, न थकना, स्नेह और सहयोग देते रहना। पोजिटिव में परिवर्तन करते रहना, नेगेटिव नहीं देखना। तो देखना इस वर्षमें ही समय को समीप ले आयेंगे।

⇨ सदा ईस वर्ष में उडते रहना, उडाते रहना। सभी आत्माओं को अपनी मन की कामनायें पूर्ण करने वाले दाता के बच्चें मास्टर दाता बन



हैं। सुनी हुई बात फिर भी भूल सकती हैं लेकिन जो वायुमंडल का अनुभव होता हैं, वह भूलता नही हैं।

⇨ क्योंकि अभी समय प्रमाण तीव्र पुरुषार्थ हैं वृत्ति से वायुमंडल बनाने का। तो वृत्ति में अगर जरा भी किचडा होंगा तो वृत्ति से वायुमंडल कैसे बनायेंगे? प्रकृति तक आपका वायब्रेशन जायेगा, वाणी तो नहीं जायेगी। वायब्रेशन जायेंगा । और वायब्रेशन बनता हैं वृत्ति से, और वायब्रेशन से वायुमंडल बनता हैं।

⇨ इसलिए बापदादा अभी समय की समीपता अनुसार हर एक जो भी बाप के स्थान हैं, चाहे गांव में हैं, चाहे बडे जोन में हैं, सेन्टर्स पर हैं लेकिन हर एक स्थान और साथियोंमें श्रेष्ठ वृत्ति का वायुमंडल आवश्यक हैं।

⇨ अभी विश्व को बहुत आवश्यकता हैं। आप निवारण मूर्त बन जाओ। आपके निवारणमूर्त बनने से आत्मायें निर्वाण में जा सकेंगी। अगर आप निवारण मूर्त नही बनेंगे तो आत्मायें बिचारी निर्वाण में जा नहीं सकेंगी। निर्वाण का गेट आपको ही खोलना हैं। बाप के साथ साथ गेट खोलेंगे ना? गेट की सेरीमनी करेंगे ना? अभी डेट बनाना आपस में।

⇨ अगर अंत में तीव्र पुरुषार्थ करेंगे तो बहुतकाल का जमा नहीं होगा। और बहुतकाल में अगर आपका जमा नही होगा तो 21 जन्मका बहुतकाल का अधिकार भी कम हो जायेगा। तो बापदादा नहीं चाहता हैं कि एक भी बच्चें का जब मेरा बाबा कहा, तो मेरा बाबा कहने वाले बच्चें, उनका अधिकार कम नही होना चाहिए।

⇨ बहुतकाल जरुर ईकट्ठा करना हैं फिर लास्ट में नहीं उल्हना देना तो हमें तो याद ही नही था बहुतकाल। 63 जन्म के बहुतकाल का प्रभाव अभी तक भी देख रहे हैं। चाहते नही हैं हो जाता हैं यह क्या हैं? बहुतकाल का प्रभाव हैं। इसलिए बापदादा हर एक प्यारे से प्यारे बच्चों को यही कहते हैं तीव्रपुरुषार्थी भव।

यह डेट ड्रामा फिक्स करेंगा या आप फिक्स करेंगे? कौन करेगा? लक्ष्य तो आपको रखना ही पडेगा।

➪ पुरुषार्थमें एक बात की तीव्रता चाहिए। पुरुषार्थ हैं लेकिन **तीव्र पुरुषार्थ** चाहिए। तीव्रता की दृढता उसकी एडीशन चाहिए। बापदादा की समय प्रमाण अभी हर बच्चों के प्रति चाहे नंबरवार हैं, बापदादा जानते हैं लेकिन नंबरवार में भी **तीव्र पुरुषार्थ** सदा रहे उसकी आवश्यकता हैं। **समय संपन्न होने में तीव्रता से चल रहा हैं** लेकिन अभी बच्चों को बापसमान बनना ही हैं, यह भी निश्चित ही हैं सिर्फ इसमें तीव्रता चाहिए। हर एक अपने को चेक करे कि मैं **तीव्र पुरुषार्थी** हुं सदा? क्योंकि पुरुषार्थ में पेपर तो बहुत आते ही हैं और आने ही हैं लेकिन **तीव्र पुरुषार्थी** के लिए पेपरमें पास होना इतना ही निश्चित हैं कि **तीव्र पुरुषार्थी** पेपरमें पास हुआ ही पडा है। होना हैं नही हुआ ही पडा हैं। यह निश्चित हैं।

➪ बापदादाने पहले भी कहा हैं कि **वर्तमान समय के प्रमाण** एक समय पर मन्सा,वाचा और कर्मणा अर्थात चलन और चहेरे द्वारा तीनों ही प्रकार की सेवा, **मन्सा द्वारा अनुभव कराना, वाणी द्वारा ज्ञान के खजाने का परिचय कराना और चलन और चहेरे द्वारा संपूर्ण योगी जीवन के प्रेक्टिकल रुप का अनुभव कराना,** तीनों ही सेवा एक समय करनी हैं। अलग अलग नहीं, **समय कम हैं और सेवा अभी भी बहुत करनी हैं।**

➪ बापदादाने देखा कि सबसे सहज सेवा का साधन हैं **वृत्ति द्वारा वायब्रेशन बनाना और वायब्रेशन द्वारा वायुमंडल बनाना क्योंकि वृत्ति सबसे तेज साधन हैं।** जैसे साईन्स की रोकेट फास्ट जाती हैं वैसे आपकी **रुहानी शुभ भावना शुभ कामना की वृत्ति, दृष्टि और सृष्टि को बदल देती हैं।** एक स्थान पर बैठे भी वृत्ति द्वारा सेवा कर सकते



सुख, शांति, प्यार, दुआयें देते रहेना और हर एक को बाप का परिचय देते हुए मुक्ति का वर्सा देते रहना।

**18-1-07**

➪ अभी **70** साल पूरे हो रहे हैं, तो बापदादा इस वर्ष को न्यारा वर्ष, सर्व का प्यारा वर्ष, **मेहनत से मुक्त वर्ष, समस्या से मुक्त वर्ष मनाने चाहते हैं।** आप सभी को पसंद हैं? पसंद हैं? **मुक्त वर्ष मनायेंगे? क्योंकि मुक्तिधाम में जाना हैं, अनेक दुःखी अशांत आत्माओं को मुक्तिदाता बाप के साथी बन मुक्ति दिलाना हैं।** तो मास्टर मुक्तिदाता जब स्वयं मुक्त बनेंगे तब तो मुक्ति वर्ष मनायेंगे ना ! **क्योंकि आप ब्राह्मण आत्मायें स्वयं मुक्त बन अनेकों को मुक्ति दिलाने के निमित्त हो।**

➪ **देखो जैसे एक तरफ साईन्स, दूसरे तरफ भ्रष्टाचारी, तीसरे तरफ पापाचारी, सब अपने अपने कार्य में और वृध्धि करते जा रहे हैं।** बहुत नये नये प्लैन बनाते जाते हैं। तो आप तो क्रियेटर के बच्चें हो, वर्ल्ड क्रियेटर के बच्चें हो तो आप इस वर्ष ऐसी नवीनता के साधन अपनाओ जो प्रतिज्ञा दृढ हो जाए।

➪ सभी पूछते हैं ना कि बाबा आपकी क्या आशा हैं। तो बापदादा आशा सुना रहे हैं। **बापदादा की एक ही आशा हैं निवारण दिखाई देवे, कारण खत्म हो जाए। समस्या समाप्त हो जाए, समाधान होता रहे। हो सकता हैं? हो सकता हैं?**

➪ **बनना तो पडेगा आपको। अभी सिर्फ जल्दी बन जाओ।**

➪ आज के दिन एडवान्स पार्टी भी बापदादा के पास ईमर्ज होती हैं। **तो एडवान्स पार्टी भी आपको याद कर रही हैं कि कब बाप के साथ मुक्तिधाम का दरवाजा खोलेंगे !** आज सारी एडवान्स पार्टी **बापदादा को यही कह रही थी कि हमको तारीख बताओ।** तो क्या जवाब दे? बताओ क्या जवाब दे? जवाब देने में कौन होंशियार हैं? बापदादा तो यही उत्तर देते हैं कि जल्द से जल्द हो ही जायेंगा लेकिन इसमें आप

बच्चोंका बाप को सहयोग चाहिए। **सभी साथ चलेंगे ना ! साथ चलने वाले हैं या रुकरुक कर चलने वाले हैं? साथ में चलने वाले हैं ना ! पसंद हैं ना साथ में चलना?** तो समान तो बनना पडेगा ना। **अगर साथ में चलना हैं तो समान तो बनना ही पडेगा ना।** क्यों साथ चलना हैं ना। अकेला बाप जाना चाहे तो चला जायें लकिन बाप जा नहीं सकता। **साथ चलना हैं वायदा हैं बाप का भी और आप बच्चों का भी।** वायदा तो निभाना हैं ना ! निभाना हैं ना?

⇨ **मधुबनमें जो भी चार्ज के हेड्स हैं,** चार्जेज तो बहुत हैं ना, शांतिवन, ज्ञान सरोवर, पांडव भवन सब जगह हैं। **तो जो चार्ज वाले हैं उनके नामों की लिस्ट बापदादा को देना, उनसे हिसाब लेंगे। और जो भी सभी टीचर्स ईन्चार्ज हैं, सेन्टर इन्चार्ज हैं या जोन इन्चार्ज हैं, उन्हों का एक दिन संगठन करेंगे, हिसाब-किताब तो पूछेंगे ना ! क्योंकि बापदादा के पास बहुत दु:ख और अशांति की आवाज आती हैं। परेशानी की आवाज आती हैं। आप लोगों के पास नहीं सुनने आते, आपके भी भक्त होंगे ना ! तो भक्तों की पुकार आप इष्ट देवों को नहीं** आती ? टीचर्स को भक्तों की आवाज सुनाई देती हैं?

⇨ अभी बहुत टाईम हो गया हैं कोई नये कार्य की ईन्वेन्शन नहीं निकाली हैं। **वर्गीकरण का कार्य भी अभी काफी टाईम चल चुका, कोन्फरन्सीस भी चल चुकी, युथ यात्रायें भी चल गई।** अभी कोई नई सेवा की विधि निकालो। सोचो। **जिससे आवाज सहज फैल जाये।** अभी तक जो भी किया हैं, सेवा के प्लैन बापदादा को पसंद हैं और वृध्धि भी हुई हैं। **लेकिन बहुत समय ये प्रोग्राम चल चुके** अभी कोई नई ईन्वेन्शन तैयार करो। कोई भी करे, छोटे करे तो इनएडवान्स मुबारक हैं।

⇨ अभी सुनाया ना आज अभी एक समय पर एक सेवा नहीं करो, तीनों ही सेवायें ईकट्ठी ईकट्ठी हो तो उसका प्रभाव जल्दी होगा। अपने चहेरे से, अपनी चलन से भी सेवा कर सकते हो। चलते फिरते म्युझियम



वायब्रेशन कईयों को घर बैठे साक्षात्कार होने लगा, आवाज गया कोई आया हैं जाओ। ऐसे बेस्ट थोट्स का वायुमंडल नजदीक ला सकता हैं। **कोई भी विस्तारमें नहीं जाओ, शोर्ट। जो भी कारोबार की बातें करनी तो पडती हैं लेकिन जहां तक हो सके विस्तार से शोर्ट करते मन्सा शक्तिशाली सेवा को बढाओ।** जैसे शिकारी जो होंशियार होते हैं वह ऐसा तीर लगाते जो पंछी तीर सहित आके पांव में पडता। यह मन्सा सेवा ऐसी पावरफुल हो, जो आत्माओं को प्राप्ति की अनुभूति हो, रह नहीं सके। मन्सा शक्तिशाली से मन्सा सेवा की सिध्धि प्राप्त होनी हैं।

⇨ अभी मन्सा स्वयं की पावरफुल होने से मन्सा सेवा की रिजल्ट सामने आयेगी।

⇨ लेकिन समय फास्ट हैं, **अभी भी समय बहुत फास्ट जा रहा हैं।**

⇨ क्योंकि ड्रामामें कोई कोई आत्मा को **अचानक और एवररेडी** का पाठ पक्का कराना हैं। देखो, जब चंद्रमणीने शरीर छोडा तो कुछ समय वह लहर अच्छी रही। सभी **अचानक** के पाठमें पक्के रहे, **फिर धीरे धीरे हल्का हो गया।** फिर यह जो ड्रामामें पार्ट हुआ यह वायुमंडलमें **अचानक और एवररेडी का पाठ फिर से पक्का कराने के निमित्त बने।**

⇨ **यह भी समय सभी को अटेन्शन खिंचाने के लिए निमित्त बनता हैं। सभी थोडा थोडा अभी समझते हैं, अभी तो टाईम पडा हैं, यह लहर अभी होनी नहीं चाहिए। एवररेडी रहना चाहिए क्योंकि बहुतकाल का भी अटेन्शन रहना चाहिए।**

**17-3-07**

⇨ लेकिन बाप को प्रत्यक्ष तब कर सकेंगे जब पहले अपने को बाप समान संपन्न, संपूर्ण प्रत्यक्ष करेंगे। तो बच्चें पूछते हैं बाप से कि कब प्रत्यक्ष होंगा? और बाप पूछते हैं बच्चों से कि आप बताओ आप **कब स्वयं को बाप समान प्रत्यक्ष करेंगे? अपने संपन्न बनने की डेट फिक्स की हैं?** बाप दादा पूछते हैं कि इसकी डेट कब फिक्स की हैं? **क्या**

अनुभव होना, अनुभव में कमी हैं, इसलिए **रियलाइझ करो, तो रीयल गोल्ड बन जायेंगे।** बाकी बापदादा खुश हैं, अटेन्शन भी टीचर्स देती हैं। **आपकी दादी (जानकीदादी)बहुत अटेन्शन देती हैं। इतना ही अटेन्शन, जितना यह आपके उपर देती हैं और उम्मीदें रखती हैं, उतना हर एक अपने उपर जो बाप की उम्मीदें हैं, वह अटेन्शन रखें तो नंबरवन तो हुए ही पडे हो ।**

⇨ अभी जो बापदादाने कहा वह हरेक, एक मिनीट के लिए दृढ संकल्प स्वरुप में बैठो कि **बहानेबाजी, आलस्य, अलबेलापन को हर समय दृढ संकल्प द्वारा समाप्त कर बहुतकाल का हिसाब जमा करना ही हैं।** कुछ भी हो, कुछ नही देखना हैं लकिन बाप के दिलतख्तनशीन बनना ही हैं, विश्व के तख्तनशीन बनना ही हैं। इस दृढ संकल्प स्वरुप में सभी बैठो।

⇨ आपके दिल में तो हैं ही लेकिन अभी **सर्व के दिलो में बापका झंडा अर्थात याद का झंडा लहराओ** तो सारा विश्व फूलों का बगीचा बन जायेगा। **कांटो का जंगल खत्म** हो फूलों का बगीचा बन जायेगा । ऐसा संकल्प सदा दिल में ईमर्ज करो, **करना ही हैं, होना ही हैं, हुआ ही पडा हैं, सिर्फ निमित्त बनना हैं।**

**3-3-07**

⇨ अभी कोई नवीनता हो। कोई स्वयं ही निमित्त बने और प्लैन देवे कि यह यह कर सकते हैं। क्योंकि वर्गीकरण की सेवा को भी काफी समय हो चुका हैं। हर एक वर्ग से ऐसे कोई स्पीकर तैयार हो। आप टोपिक देते हो उस पर भाषण देते हैं, नहीं। खुद उमंग आवे मुझे यह करना हैं। ऐसा कुछ प्लैन बनाओ। **उसका आधार हैं, स्वयं निमित्त बनने वाले सेकन्डमें बेस्ट को खत्म कर बेस्ट का प्रभाव वायुमंडल में फैलाये।** वेस्ट अभी भी हैं इसलिए मन्सा द्वारा सेवा का रेसपान्ड प्रेक्टिकल रुप में कम हैं। जैसे शुरु शुरु में स्थापना के समय में ब्रह्मा बाप का मन्सा



हो। अभी थोडा सा **रियलाईझेशन** सूक्ष्म चाहिए। **रियलाइझ करते हो लेकिन थोडा सा सूक्ष्मरुप से रियलाईझ करके नंबरवन बन जाओ।** विन करो और वन, सेकन्ड नंबर नहीं, वन।

⇨ आज वतन में जो आपकी एडवान्स पार्टी वाले बच्चें हैं, उन्होंने भी एक एक ने यही कहा हैं कि हमारी तरफ से भी सभी को, चारों ओर के बच्चों को यादप्यार हमारी देना और **हमारा संदेश देना कि हम आपका इंतजार कर रहे हैं। आप जल्दी से जल्दी इंतजाम करो।** विशेष आप सबकी प्यारी मां, दीदी, भाउ विश्वकिशोर और जो भी साथी गये हैं उन्होंने, सभी ने आप सबको यादप्यार दिया हैं और **साथ साथ मीठी मां आपकी, उसने यही कहा हैं कि अब विजयी बन दुःख दर्द दुर कर जल्दी जल्दी मुक्तिधाम का गेट खोलने के लिए बाप के साथी बन जाओ।**

**2-2-07**

⇨ **बापदादा सभी बच्चों को समय की सूचना भी देते रहते हैं।** यह वर्तमान संगम का समय सारे कल्प में श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ समय हैं क्योंकि यह संगम ही श्रेष्ठ कर्मो के बीज बोने का समय हैं। प्रत्यक्ष फल प्राप्त करने का समय हैं। **इस संगम समय में एक एक सेकन्ड श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ हैं।**

⇨ कोई भी छोटे बडे कोई स्थान नहीं रहे जो आपको उल्हना देवे कि हमारा बाप आया और हमें आपने सूचना नहीं दी, संदेश नही दिया। **यह उल्हना नहीं रह जाये।** जैसे आफ्रिका वालों ने अपनी एरिया को संदेश देने का कार्य सफल किया हैं। बापदादा को यह कार्य अच्छा लगता हैं। कोई का भी उल्हना नही रह जाना चाहिये। आपका काम हैं संदेश देना, वह अभी आवे या पीछे आवे लेकिन आपने अपना कार्य संपन्न किया। कोई भी एरिया खाली नही रहनी चाहिए। क्योंकि आप तो जानते हो ना - कि **बाप का परिचय मिलने से, बापके संबंध में आने से आत्मायें कितनी सुखी बन जायेंगी। अभी तो दिन-प्रतिदिन**

**दु:ख और अशांति बढती जा रही हैं क्योंकि दिन प्रतिदिन भ्रष्टाचार, पापाचार बढ रहा हैं। अति में जा रहा हैं।** तो अपने भाई फिर भी बाप तो एक ही हैं ना, चाहे जाने चाहे माने, नहीं भी माने लेकिन बाप तो बाप ही हैं। तो अपने भाईओं को अपनी बहनों को संदेश जरुर दे दो। कोई गांव भी नही रहना चाहिए।

⇨ तो बापदादा कहते हैं चल रहे हो वा उड रहे हो? **अभी चलने का समय नहीं हैं, उडने का समय हैं। उमंग उत्साह के, हिम्मत के पंख हर एक को लगे हुए हैं तो पंखो से उडना होता हैं।** तो रोज चेक करो, उडती कलामें उड रहे हैं?

⇨ मन्सा शक्ति द्वारा आत्माओं की आत्मिक वृत्ति बनाओ। वायुमंडल बनाओ। **अभी दु:ख बढता हुआ देख रहम नही आता हैं? आपके जड चित्र के आगे चिल्लाते रहते हैं, मर्सी दो, मर्सी दो, अब दयालु कृपालु, रहमदिल बनो।** अपने उपर भी रहम और आत्माओं के उपर भी रहम।

⇨ **यह सब अति में जाना हैं। देखो 10 साल पहले भ्रष्टाचार, पापाचार गुप्त था, आजकल खुले बजार में हो गया हैं, अति में जाना हैं। कलियुग हैं ना ! कलियुग अति में जा रहा हैं।**

**15-2-07**

⇨ बाप को अकेला विश्व परिवर्तन का कार्य नही करना हैं, बच्चों के **साथ साथ** करना हैं। यह अलौकिक **साथ** रहने का प्यार, **साथी** बनने का प्यार यह संगम पर ही अनुभव करते हो। बाप और बच्चों का इतना गहरा प्यार हैं, **जन्म भी साथ हैं और रहते भी कहां हो? अकेले या साथ में** ? हर एक बच्चा उमंग उत्साह से कहते हैं हम बाप के कम्बाईन्ड हैं। कम्बाईन्ड रहते हो ना ! अकेले तो नहीं रहते होना ! **साथ जन्म हैं, साथ रहते हैं और आगे भी क्या वायदा हैं? साथ हैं, साथ रहेंगे,** ***साथ चलेंगे अपने स्वीट होम में।***



⇨ तो वायदा क्या हैं? **साथी रहेंगे, साथ चलेंगे,** कम्बाइन्ड रहेंगे तो कम्बाईन्डमें समानता तो चाहिए ना।

⇨ आज के दिन बापदादा की शुभ आशा हैं अपने आशाओं के दिपक बच्चों प्रति। तो बतायें? अपने को बांधना पडेगा, तभी कहो हां, ऐसे ही नहीं। क्योंकि **70** वर्ष देखो, **70 वर्ष तो बापदादाने भी अलबेलेपन, आलस्य और बहाने बाजी, 70 वर्ष खेल देख लिया।** चलो **70** नही तो **50,40,30,20** लेकिन इतना समय तो यह तीन खेल तो खूब देखे बच्चों के। तो आज के दिन भक्त जागरण करते हैं, सोते नही हैं तो आप बच्चों का जागरण कौन सा हैं? कौन सी नींदमें घडी-घडी सो जाते हो, **अलबेलापन, आलस्य और बहानेबाजी की नींदमें आराम से सो जाते हैं। तो आज बापदादा इन तीन बातों का हर समय जागरण देखना चाहते हैं।**

⇨ लेकिन हैं क्या, **70** वर्ष तो हल्का छोडा लेकिन बापदादा देख रहे हैं कि **समय का कोई भरोसा नहीं** और **इस ज्ञान के आधार पर हर पुरुषार्थ की बात में बहुतकाल** का हिसाब हैं।

⇨ तो **बहुतकाल** की प्राप्ति हैं। तो हर बात **में बहुतकाल** तो चाहिए ना।

⇨ **दूसरे को देखना सहज होता हैं,** अपने को देखने में थोडी हिम्मत चाहिए। तो आज बापदादा हिसाब लेने आये हैं। लेकिन हिसाब का किताब खत्म कराने की गिफ्ट लेकर आये हैं। कमजोरी और बहानेबाजी का हिसाब-किताब बहुत बडा किताब हैं उसको खत्म करना हैं। तो हर एक जो समझते हैं **हम करके दिखायेंगे, करना ही हैं, झुकना ही हैं, बदलना ही हैं, परिवर्तन सेरीमनी मनानी ही हैं वह हाथ उठाओ ।**

⇨ बापदादाने टोटल देखा हैं चाहे देश में, चाहे विदेश में हर पोईन्ट के अनुभव में डीप में जाना यह थोडा अटेन्शन कम हैं। **सुनने और सुनाने में अटेन्शन अच्छा हैं, उसमें नंबर वन हैं, लेकिन अनुभवी मूर्त बनना,** चलते फिरते आत्मा का अनुभव होना, बाप के कम्बाईन्ड रुप का